भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

भक्तों में जितना 'कुटुंबभाव बढ़ा'
इतना
'सत्संग बढ़ा' कहा जाए !

त्रिमूर्ति

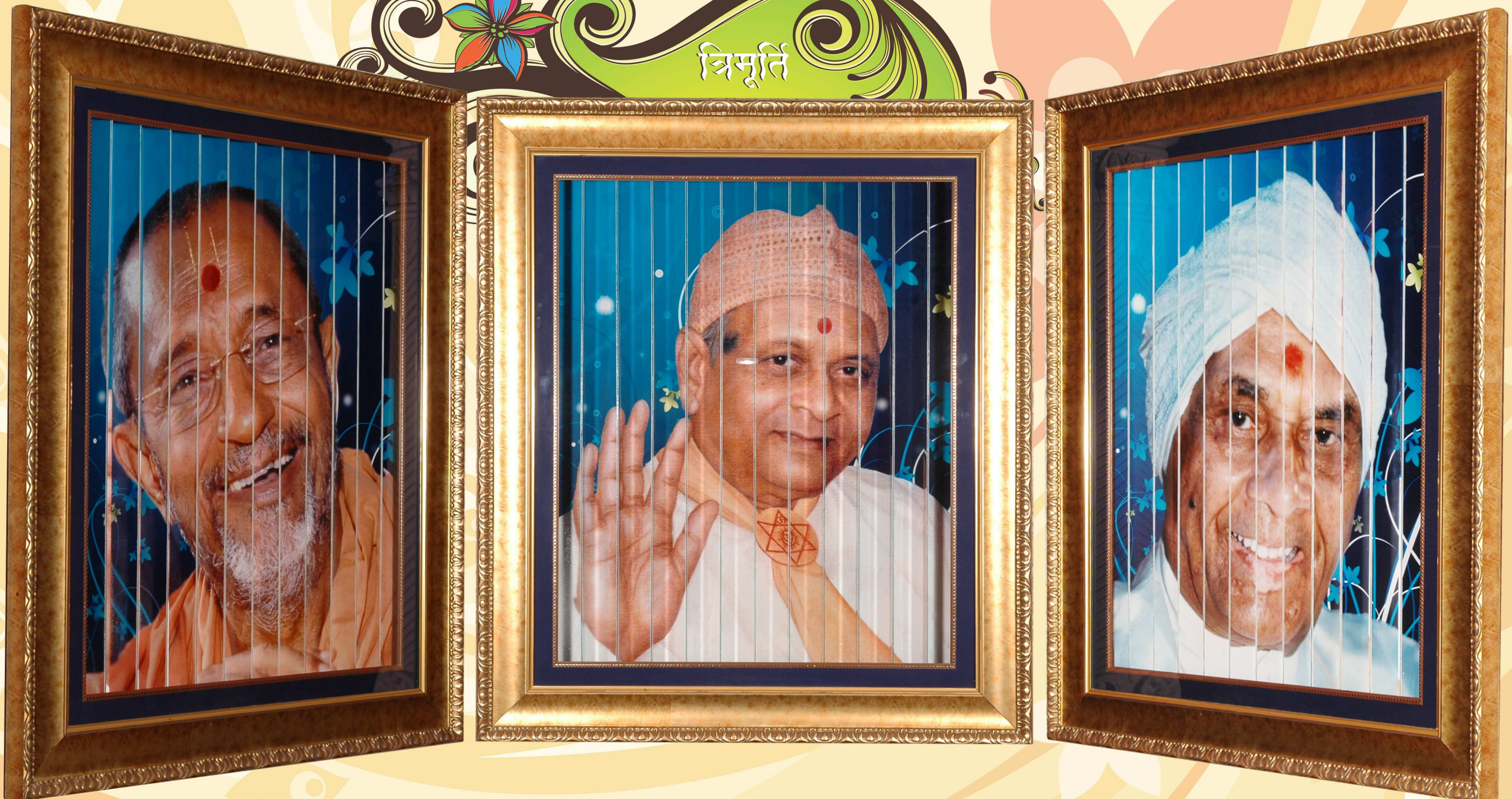

प.पू. गुरुजी ने भीतर में यह बात खुद तो पकड़ी ही है, पर अपने से जुड़े सभी के मन में भी बिठा दिया है कि–
प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू.स्वामिजी – इन तीनों स्वरूपों में एक ही परम तत्त्व है।

– प.पू.दीदी

१२ जून... अध्यात्म का अखंड पावरहाऊस
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की जयंती के परम पावन अवसर पर!

१२ जून.... परम चिंतामणिरूप गुणातीत विभूति का प्रागट्य दिन! शुद्ध गुणातीत परंपरा में तनिक भी आँच लाए बिना अखंड सेवकभाव रख कर हम सब के लिए – गुणातीत समाज के लिए जीने वाला असली अमर अविनाशी स्वरूप यानि – **प.पू. काकाजी!** गुरुभक्ति और स्वरूपनिष्ठा का मूर्तिमान स्वरूप! उनके रोम-रोम में केवल योगी के संबंध वालों के लिए ही फनां हो जाने की एकमात्र भावना धबकती रही... ऐसी थी विरल, साधु, अंतर्यामी, सर्वज्ञ, पारदर्शक व संकुचितता और सांप्रदायिक मतभेदों के दायरों से ऊपर उठ कर आध्यात्मिक क्रांति करने वाली वो सनातन शाश्वत् विभूति!

जिस-जिसने इनका दर्शनमात्र भी किया उसका जीवन सार्थक हुआ और जीवन की वो पल धन्यता को पा गई व उन चैतन्यों ने उनके साथ जन्मों जन्म की दृढ़ गाँठ बाँध ली। हर एक ने अपनी-अपनी दृष्टि से, अपने-अपने अनुभव से, अपनी-अपनी कक्षा के मुताबिक उन्हें निहारा... जीव में स्थान दिया। जिस-जिसने उन्हें अपना 'सर्वस्व' मान कर समर्पण किया, उनकी बुद्धि के दोष उन्होंने टाल दिए।

प.पू. काकाजी अर्थात् गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा हम सबको बख़्शिश में दिया 'कृपाप्रसाद'! उनके समग्र हलन-चलन में भक्तों के प्रति करुणा, आत्मीयता की सुवास अखंड महकती रही। साथ ही **समग्र सत्संग समाज को निर्दोषबुद्धि भावात्मक एकता एवं मैत्रीभाव की भावना से उन्होंने सींचा।**

समग्र वैभव संपत्ति, रिद्धि-सिद्धि, मान-मर्तबा, ऐश्वर्य-प्रताप को ठुकरा कर एक महाराज को ही 'सर्वोपरि' मान करके, महाराज के दास बन कर उन्होंने 'स्वामिनारायण' की धुन करा करी और अथक् परिश्रम करके हम से रत्तीभर अपेक्षा रखे बिना हम सब को प्रभु का ही बल लेकर जीने की राह पर चलने अग्रसर किए।

विशालता व वात्सल्य का मूर्तस्वरूप **प.पू. काकाजी ने मेरा-तेरा, अपना-पराया कुछ भी गिने बिना सब बापा का ही है, यूं मान कर आख़िरी सांस तक गुणातीत बगीचे के फूलों की परवरिश करी** और... एहसास करा दिया कि वे – सभी के आत्मीय स्वजन, प्रशंसक या विरोधी के सुख-दुःख में आधी रात को भी भागीदार, साथीदारों के परम सखा, मुमुक्षुओं की आत्मा के सारथीरूप राहबर, दिलावर, खेलदिल अलमस्त विभूति हैं!

पर, नायगरा के धोध की भांति निरपेक्ष प्रेम देने आई अक्षरधाम की इस विभूति को इन मायिक चक्षुओं से देखने के कारण हम एक भ्रमणा में ही रहे और उनके यथार्थ स्वरूप को पहचान नहीं पाए... सच, चतुर्परव गुणातीत समाज के सृष्टा-रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित प.पू. काकाजी जैसी अद्भुत प्रतिभा को बाह्यदृष्टि से देखने पर उनकी आध्यात्मिक ऊँचाई को पहचानना अत्यंत कठिन था ही।

लेकिन, भगवान के ऐसे प्रगट स्वरूप की स्मृति, एकांतिक संत की अनुवृत्ति और संबंध वालों में सुहृद्भाव – ये तीन बातें हम दृढ़ कर लें, तो अक्षरधाम का दिव्य सुख जीतेजी प्राप्त कर सकेंगे इसकी गारंटी भी वे बार-बार देते... तो, इसी सिद्धांत पर प.पू. काकाजी की 'सिद्धांतिक प्रसन्नता' पाने हम अग्रसर रहें – उसे सही अर्थ में कहा जाए प.पू. काकाजी का नूर!!!

और... ऐसी सिद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त हुई कब कही जाए? जब अंदर बैठी प्रगट प्रभु की मूर्ति हंसती दिखाई पड़े... अखंड दिव्यभाव के ही शुभ संकल्प

उठा करें... भीतर में शांति-शांति ही रहती हो... बस संबंध की महिमा की मस्ती रहा करे...

प.पू. काकाजी को स्थूल स्वरूप से विदाई लिए हुए भले २२ साल का लंबा समय गुज़र गया, लेकिन उनकी ओर से हमारे चैतन्य की परवरिश करने में तो उनके द्वारा कोई फर्क नहीं पड़ा। पर, वे हमें जो देना चाहते हैं, वह पा लेने में अब हम देरी ना करें।

इस हेतु **१९७४** की **उभराट शिविर** में प.पू. काकाजी द्वारा करी निम्न कथावार्ता की जुगाली करें। इस कथावार्ता का एक-एक शब्द अपने आप में मर्म लिए हुए है। इस मर्म को पकड़ कर वर्तेंगे, तो हम अपने जीवन में अवश्य बदलाव महसूस करेंगे...

मान-अपमान में एकता, सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय में समभाव,
सहन करे, पीछे हठ करे, बदला ना ले, राग-द्वेष ना हो;
ये सब एक सामान्य कक्षा के संत के लक्षण हैं।
ऐसे निष्कामी व धर्मवान तो कई थे और अभी भी हैं।
लेकिन यह जो बात है वह यह कि –
'संकल्प इन्हीबिटॅड बियॉन्ड रीसरक्शन' – संकल्प उत्पन्न होने समर्थ ही नहीं हो;
वो जीव ब्रह्मभाव को पा गया!
जैसे स्टेनलेस स्टील को कभी जंग लगता ही नहीं;
यूं उतने ताप में से उसे गुज़ारा–पर, वह बापा करा सकते हैं।
यहाँ गुणातीत संत की जरूरत पड़ेगी-असली संत की जरूरत पड़ेगी
और.......
ऐसे स्वरूपलक्षी पुरुषों की बापा तुम्हें पहचान करवाते गए हैं।
सो, हमारा खूब जय जयकार है ही।
फिर भी, **व्यवहार की कोई झंझट है या ऐसी और कुछ रूकावट आती रहती है,**
उसकी मूलभूत वजह यह है कि –
भगवान या संत के सिवा कहीं ना कहीं किसी प्रकार का कोई अन्य प्रभाव पड़ जाता है।
क्या यह हक़ीक़त है कि वे निर्गुण हैं–वे अमायिक हैं और तुम मायिक हो?
वे अमायिक हैं यानि अमायिक! तो, **एक जगह यानि – उनमें से जो आए, वही करना है।**
वहाँ तर्क-वितर्क नहीं।
वहाँ सम्यक् प्रकार से टोटल सरंडर! बिना शर्त की शरणागति!!
वहाँ ज़रा भी 'अरे, किन्तु, परंतु' नहीं चलेगा; हक़ीक़त यानि हक़ीक़त।
'मान्यता'-कन्सॅप्शन-बीलीफ तुम्हारे ढंग की-तरीके की है।
प्रसंग बनेंगे, आप 'हाँ-हाँ' भी करोगे।
९९ प्रतिशत शायद तुम पूछ कर करते होंगे, पर १ प्रतिशत तुम्हारा धारा-मनमानी कर डालोगे;
और वहाँ... रॉकेट फेइल हो जाता है।
पावरहाऊस भी है, पर केबल में लीकेज भी हो या फ्यूझ उड़ जाए!
सो तीन चीजें पक्की होनी चाहिए।
पावरहाऊस तो फेइल जाने वाला नहीं है।

लेकिन, तुम्हारे केबल में लीकेज तो नहीं है ना? और फ्यूझ उड़ जाता तो नहीं ना?
ये तीन चीजें पक्की करनी चाहिए।

पावरहाऊस तो अखंड है, है और है ही।

लेकिन तुम्हारे केबल में लीकेज ना रहे और फ्यूझ उड़ना नहीं चाहिए।

और... ऐसे कार्यकर्ता जहाँ भी पुकार करें वहाँ प्रभु आ ही जाते हैं।
हरिभाई साहेब ने यह कर लिया, साहेब ने कर लिया।
हर एक ऐसे कर सको उसके लिए–
एक टॅक्नीक, एक युक्ति, एक चाबी, एक 'मास्टर की' तुम्हें दी जाएगी – उसे आजमाना!
लेकिन तुम नहीं आजमाओगे। मुझे यह पक्का यक़ीन है कि तुम नहीं आजमाओगे।
क्यों नहीं आजमाओगे?

तुम कहोगे भी कि यह चाबी अच्छी है; तो फिर लगाओ ना?

पर, यह लगाने में कहीं ना कहीं असावधानी-गफ़लत बाधारूप बनती है।

'मैं', 'लेकिन' और 'मुझे' रूकावट करते हैं।

कार्यान्वित करने में वह आदत डाली नहीं है।
यह आदत डालने के लिए, उसका अभ्यास करने के लिए, उसकी प्रेक्टीस करवाने के लिए ऐसी शिविर होती हैं।
तो खुले दिल से करना।
मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ता है।

यूं इस भव्य प्राप्ति का-इस सुंदर सोच का

दिन में पाँच बार एकाग्रचित्त से यदि हृदय में पक्का ठहराव कर लो;

तो भगवान ऑटोमॅटिक काम करते हो जाएंगे – वहाँ प्रभु (सब) करेंगे। वे ही सॅट कर देंगे।
हमारी बुद्धि से बंदोबस्त करने जाएंगे, तो उल्टा पड़ जाएगा।
तुम **जितना बौद्धिक सॅटींग करोगे, उतना अपसॅट जरूर होगा ही-यह भूलना नहीं।**
लेकिन, यदि तुम **उनके ऊपर (प्रगट प्रभु पर) छोड़ दोगे,**
तो वे अव्यवस्था में सुंदर व्यवस्था कर देंगे।*
हमारा सारा अक्षरपुरुषोत्तम का सिद्धांत ही यह है।

मर्यादित-फिर भी अमर्यादित, अमर्यादित फिर भी मर्यादित;
अव्यवस्थितता में व्यवस्थितता, व्यवस्थितता में अव्यवस्था।
इन दोनों को संतुलित करने वाले तो 'स्वरूप' हैं।
उसी स्वरूप का ही बल लेकर, उन्हें ही आगे रख कर – यानि, यह 'एक' का अंक पक्का रखें,
तो ९९ प्रतिशत सब कुछ वे प्रगट प्रभु कर लेंगे।
यह 'एक' का अंक सभी को पक्का हो जाए यही प्रार्थना!

– प.पू. काकाजी महाराज, १९७४

---

* **प.पू. पप्पाजी** इसी बात को अलग ढंग से कहते कि– **'लॅट हिम वर्क'**!

प.पू. गुरुजी का ७१वाँ प्राकट्योत्सव यानि – 'योगी परिवार' के मुक्तों के दिव्य मिलन का स्रोत!

गुणातीत समाज के अधिकांश मुक्त जानते हैं कि प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन १३ मार्च है, पर एक भक्ति अदा करने यह प्राकट्योत्सव हम मार्च के अंतिम रविवार को मनाते हैं।

हाँ, दिल्ली के मुक्तों के लिए तो फागुन शुक्ल - १ से ही प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव का शंखनाद गूंजने लगता है। वजह – हिन्दी तिथि के अनुसार फागुन शुक्ल -१ एवं अंग्रेजी तारीख के मुताबिक १३ मार्च को तो दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-यू.पी. के स्थानिक मुक्त एकत्रित होकर प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन मनाते ही हैं। और... अंत में मार्च के अंतिम रविवार को तो पूरा **'योगी परिवार-गुणातीत समाज'** एकत्रित हो जाता है!

यूं महीनेभर से निमंत्रण कार्ड, पत्रिका, डॅकोरेशन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की रिहल्सर्ल्स की तैयारियों के साथ प.पू. गुरुजी के ही अनुसंधान में मानो दिन-रात गुजरते हैं। हाँलाकि, सत्पुरुष का भी यही एक उद्यम होता है कि जीव चौबीस घंटे केवल प्रभु के ही मनन, चिंतन में रहे। सो, शायद **ऐसे उत्सव मनाना - वह इसी राह पर अग्रसर रहने का तरीका है।**

दूसरी ओर, जैसे कि हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी का एक आग्रह है कि –

'गुणातीत समाज' भिन्न प्रवाहों में बंटता ना जाए और... सिर्फ नाम मात्र के लिए ना रह कर, 'युनिफाईड एप्रॉच' के जिस मक़सद से प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी ने इसका सर्जन किया, वह मारा ना जाए।

इसी हेतु इनकी चाहना रहती है कि 'योगी परिवार' की नींव के हम पुराने मुक्त, भले ही मेरे जन्मदिन निमित्त – पर, यूं एकत्रित तो हों।

और... मार्च महीने में 'योगी परिवार' के इन सभी मुक्तों के आने का संदेश पाकर प.पू. गुरुजी के मुखारविंद पर एक अलग ही ख़ुशी का दर्शन हुआ कि – ओहो! हम सब पुराने जोगी इकट्ठे होंगे, सारी स्मृतियाँ ताजी होंगी, सब बैठेंगे और साथ मिलजुल कर आनंद करेंगे।

सच, समग्र 'योगी परिवार' के प्रति प.पू. गुरुजी के अपनेपन को शब्दों में बयान करना खूब ही कठिन है।

अपने प्राकट्य दिन के आशीर्वचन में प.पू. गुरुजी हर बार इस बात का जिक्र तो जरूर करते ही हैं कि –

आप सब मेरे जन्मदिन पर जरूर-जरूर आते रहना; आपके आने से मुझे एक हूँफ मिलती है...

पर, अबकी बार तो आऊट ऑफ धी वे जाकर प.पू. गुरुजी नम आँखों से बोल उठे कि –

शुड आई हग यू इन्डीविड्युअली !

सोने पे सुहागा रूप प.पू. गुरुजी का ७१वाँ प्राकट्य दिन मुक्तों के लिए एक चिरंजीव स्मृति बन गया; क्योंकि **२०१२** में आ रहे **प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव** का उद्घोष अबकी बार किया गया और इसे **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** के नाम से निम्न प्रकार से नवाज़ा गया...

*'ब्रह्मसूत्र भाष्य में **'ब्रह्म'** का लक्षण बताया है – **'आनंदोब्रह्म'**!*

भाषा के मुताबिक सभी भाववाचक शब्दों के विलोम – ऑपोज़िट/एन्टॉनिम शब्द होते हैं। जैसे कि : हर्ष-शोक, सुख-दुःख, शांति-अशांति, जय-

*पराजय इत्यादि। परंतु, एक **'आनंद'** शब्द ऐसा है कि जिसका कोई विलोम-ऑपोज़िट/एन्टॉनिम शब्द ही नहीं है।*

*और... हम सभी ने देखा है कि हम सब मिलजुल कर-एक जुट होकर रहें और प्रभु की मूर्ति में तरबोर रह कर अखंड **ब्रह्मानंद** किया करें, यही प.पू. गुरुजी की दिली इच्छा रहती है और... हमारे प्रिय प.पू. गुरुजी सभी को हमेशा **'आनंद'** कराते भी रहते हैं।*

*दूसरी ओर, प.पू. काकाजी ने बताया था कि – प.पू. गुरुजी भगवान स्वामिनारायण के समय के **'आनंदस्वामी'** हैं। इन्हें मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद-स्वामिजी के साथ खूब लगाव था और... अब की भी 'योगी परिवार' के प्रणेता व गुणातीतस्वरूप प.पू. काकाजी से उनको खूब लगाव हो गया! सो, प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव का नामांकन 'योगी परिवार अमृत **आनंद**ोत्सव' कर रहे हैं – जो कि हम **२०१२ में मनाएंगे**।*

*यूं, 'आनंद' शब्द से प.पू. काकाजी की दिव्य स्मृति तो जुड़ी है ही। पर, प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्य उत्सव निमित्त अमदावाद से **प.पू. अध्यात्मानंद-स्वामिजी** का शुभेच्छा पत्र जो आया, उसमें उन्होंने इस उत्सव के लिए **'आनंदपर्व'** शब्द का प्रयोग किया है। वह पढ़ कर भी प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव को 'योगी परिवार अमृत **आनंदोत्सव'** कहे जाने की प्रेरणा मिली है।*

***'योगी परिवार** अमृत आनंदोत्सव' इसलिए कि – प.पू. गुरुजी की बातों में अकसर आता है कि **'योगी परिवार'** में से 'गुणातीत समाज' पनपा है! दूसरी ओर प.पू. गुरुजी के सॅन्टीमेन्ट्स भी **'योगी परिवार'** से खूब जुड़े हुए हैं।*

*साथ ही – प.पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्योत्सव २०१२ में होना भी एक सांकेतिक बात है। एक बार प.पू. गुरुजी ने यहाँ सभा में कुछ खूब अच्छी बातें करी। सुन कर, प.पू. काकाजी खूब राजी हो गए और एकदम बोले– **'ओहो! बार वरसे बावो बोल्यो.'** **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** का वर्ष, शाश्वत् स्वरूप प.पू. काकाजी द्वारा यूं कही प्रसादी की **'बारह'** संख्या का वर्ष है, जो सही मायने में हम सभी को **'शाश्वत् आनंद'** से भरपूर कर ही देगा।*

तो, अब से चार वर्ष का अमूल्य समय हमारे पास है। अक्षरधाम से प.पू. काकाजी हमें जो देने प.पू. गुरुजी को लेकर आए हैं, वो प्राप्त करके जीवन की आख़िरी सांस तक 'आनंदोत्सव' करने की राह पर हम अग्रसर रहें यही अभीप्सा...'

प.पू. वशीभाई अकसर कहते हैं कि– ***कुछ ना कुछ नया ही करें – वो गुरुजी!*** अब की बार, इस उत्सव में मंदिर के मेईन गेट से प्रवेश करते ही बैठक में जहाँ प.पू. गुरुजी कई बार सायं को बैठ कर सभा करते हैं, वहाँ रखी एक **त्रिमूर्ति** सभी के आकर्षण का केन्द्र बनी रही। इस मूर्ति की विशेषता यह थी कि सामने से देखें तो **प.पू. काकाजी**, दाईं ओर से देखें तो **प.पू. पप्पाजी** और बाईं ओर से देखें तो **प.पू. स्वामिजी** दिखाई देते थे। एक ही फ्रेईम में प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी. प.पू. स्वामिजी तीनों की मूर्ति और...वे तीनों एक-दूसरे में समाते-लीन होते दिखाई पड़ते।

दरअसल प.पू. गुरुजी ने बचपन में मुंबई के माधव बाग में 'ब्रह्मा, विष्णु, महेश' की इसी प्रकार की मूर्ति देखी थी और वो करामत उन्हें खूब भा गई होगी। तो, उनके मन में था कि कभी ना कभी ऐसी मूर्ति जरूर बनवानी है। सो, उन्होंने एक बार सेवक आशिष को अपना विचार बताया था और जैसे कि प.पू. गुरुजी ने भीतर में यह बात खुद तो पकड़ी ही है, पर अपने से जुड़े सभी के मन में भी बिठा दिया है कि–

प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी – इन तीनों में एक ही परम तत्त्व है।

सो ही, प.पू. गुरुजी की भावना को उसने ना केवल पकड़ी, बल्कि अबकी बार खूब लगन से मेहनत करके लगातार १२ घंटे बैठ कर इसे मूर्तस्वरूप दिया। इसे देखते ही प.पू. गुरुजी अत्यधिक राजी हो गए... उत्सव में आए हर एक को भी यह मूर्ति खूब भा गई।

योगी परिवार के इस दिव्य उत्सव में अपनी सन्निधी देने विद्यानगर से २६ मार्च की सुबह पू. ईलेशभाई आ गए। प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. आचार्यस्वामी, पू. हेमंतभाई, पू. गिरीशभाई, पू. योगिनी बहन एवं अन्य करीब पच्चीस मुक्त २८ मार्च की दोपहर तक 'ताड़देव' मंदिर पहुँच गए। और... सायं की फ्लाईट से प.पू. साहेबजी, प.पू. शांतिभाई साहेब भी दिल्ली आ गए थे। दूसरे दिन २९ मार्च की सुबह सांकरदा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, विद्यानगर से प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योति बहन, पू. डॉ.नीलम बहन एवं ज्योत की बहनें आईं। इसी दौरान अमदावाद-मुंबई-पंजाब के अन्य हरिभक्त भी मंदिर आ गए। और... दोपहर तक तो कंथारिया से पू. विज्ञानस्वामी, एरू से पू. कौशिकभाई देसाई इत्यादि मुक्त भी एक अपनेपन के नाते आ गए।

अब जब योगी परिवार के अधिकांश सभ्य एकत्रित हों, तब सहज ही एक शिविर हो जाती है। सो, २९ मार्च की सायं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई की निश्रा में घरेलू सभा हुई। सभा में प.पू. साहेबजी ने **'स्वर्णस्वर-४'** भजन संग्रह एवं प.पू. वशीभाई ने **'नादब्रह्म'** – प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की 'धुन' व **'स्वामिनारायण-नारायण'** की म्यूझिकल धुन की सी.डी. का अनावरण किया, तब नादब्रह्म के बारे में निम्न गहरा मर्म सुन कर सभी भावविभोर हो गए...

__'नादब्रह्म'__ शब्द सुनते-पढ़ते ही सभी के कानों में __ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की लयबद्ध धुन__ का रणकार गूंज उठता है। धुन के तो वे राजा थे! एकदम __लयलीन होकर धुन करती प.पू. काकाजी की मूर्ति का दर्शन करना भी मानो जीवन का एक अनमोल सौभाग्य (લ્હાવો) था। ऐसा लगता था मानो साक्षात् महाराज व योगीबापा से उनका वार्तालाप चल रहा है।__

वैसे भी, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी की धुन करती आवाज के साथ-साथ धुन करने से हमारी लगन सहज ही बढ़ती जाती है। कई मुक्त तो कहते हैं कि ऐसे धुन करने की मजा ही और है... ऐसा होता है कि वो आवाज निरंतर सुनते ही रहें और हम धुन करते ही रहें।

सो, यूँ भजन करने की प्रेरणा पाने प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्य पर्व निमित्त ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी की धुन की सी.डी. प्रस्तुत करी हैं।

__प.पू. गुरुजी__ अकसर कहते हैं कि –

प.पू. वशीभाई जब महापूजा में धुन कर रहे होते हैं, तो ऐसा महसूस होता है कि महापूजा में महाराज स्वयं हाज़िर हो गए हों।

सो, धुन के ऐसे इश्की एवं प.पू. गुरुजी के प्रिय सखा __पू. वशीभाई__ से प्रार्थना है कि वे धुन की इन दोनों सी.डी. का उद्घाटन करें।

१९४८ में ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरनिवासी __श्री गुलज़ारीलाल नंदाजी__ को दिल्ली आते हुए मुंबई में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की एक मूर्ति दी थी और साथ ही कहा था कि–

'उत्तर भारत में स्वामिनारायण का संदेशा फैलाना।' राजनैतिक कार्य की व्यस्तता के कारण उस समय यह कार्य ना हो पाया। लेकिन १९९४ में __राजधानी दिल्ली के अशोकविहार में जब श्री अक्षरपुरुषोत्तम__

का यह पहला मंदिर स्थापित हुआ, तभी संजोगवश ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज द्वारा दी गई वह मूर्ति इसी मंदिर में आ पहुँची! *शायद यह* ***संकेत था कि–***

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने अपने संकल्प को जिसके द्वारा पूरा किया, उन 'प.पू. गुरुजी' पर मानो प्रसन्नता व्यक्त करी।

आज, उसी मूर्ति का दर्शन हमें 'स्वामिनारायण-नारायण' सी.डी. के कवर पेज पर हो रहा है।

*और...अकसर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की परावाणी एवं प.पू. गुरुजी के मुख से यही सुना है कि–****'भजन' सब मुश्किलों का 'रामबाण' इलाज है!***

सो, अनावरण के लिए एक बड़े आकार का **बाण** बना कर उस पर 'स्वामिनारायण' लिख कर ये दोनों सी.डी. रखी हुई थी। सभी को यह कन्सॅप्ट खूब पसंद आया।

इस सभा दौरान कई मुक्तों ने प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त अपने हृदय के भाव भी प्रकट किए और... प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. भरतभाई ने सभी को आशिष प्रदान किए।

३० मार्च की सुबह, उपस्थित मुक्तों ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई के सान्निध्य में महापूजा का लाभ तो लिया ही; और... ऐसे सत्पुरुषों की निश्रा में तो अपने आप ही सभा का माहौल भी बन जाता है। इस सभा में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** का अनोखा दर्शन हुआ... उनके अत्यंत प्रसन्न मुखारविंद से व बोलने से ऐसा लगता था कि मैं प.पू. गुरुजी के लिए कितना और क्या-क्या बोल दूँ?

सभा के पश्चात् सभी ने प्रसाद लिया, तो दूसरी ओर– सायं को होने वाले प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्योत्सव की पूर्व तैयारियों ने आकार लेना शुरु किया...

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए करीब साढ़े छः बजे प.पू. अक्षरविहारी-स्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. भरतभाई ने सभा मंडप में प्रवेश किया।

इन स्वरूपों के प्रवेश के समय एक अन्य मनमोहक दृश्य भी देखने को मिला। प.भ. नवीनभाई का करीब सवा साल का पौत्र **'नक्षत्र'** भी प.पू. गुरुजी की भाँति ही भगवा रंग का कुर्ता-लुंगी, गले में रूद्राक्ष युक्त कंठी, चेईन वाला छोटा चश्मा एवं सिर पर पाघ पहन कर चल रहा था और सभी को अपनी ओर सहज ही लुभा रहा था।

सभा मंडप की पृष्ठभूमि ने आज निमंत्रण कार्ड वाला, यानि – **'प्रगट के कायदे'** वाला ही कॉन्सेप्ट लिया हुआ था। प.भ. आशिष ने खूब परिश्रम करके अंग्रेजी के 'ए' से 'ज़ेड' तक के वर्ण को आध्यात्मिक मर्म लिए प्रदर्शित किए थे। इसे देख कर **सौ. शीला आंटी** तो इतने खुश हो गए कि सहज ही बोल उठे– ***'सिर्फ सिम्पल और सोबर से भी ज्यादा, प्यॉर स्पीरीच्युअल कॉन्सेप्ट लग रहा है।'***

सभी स्वरूपों के आसन ग्रहण करने के थोड़ी देर बाद **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** आए और सभी को दर्शन का सुख देते हुए स्टेज पर जाकर उन्होंने अपना आसन ग्रहण किया।

और... स्वामिनारायण धुन-भजन की गूंज से सभा का प्रारंभ हुआ। आज भी कई वक्ताओं ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव प्रकट किए।

पर, सभा में पहले ही वक्ता जगरांव के **प.भ. नरेन्द्रजी** ने जब अपने उद्गार कहने शुरु ही किए कि माया अबकी बार भी अपना तांडव दिखाने से पीछे नहीं रही... बिजली में कुछ शॉर्ट सर्किट होने के कारण स्टेज की छत के कपड़े में आग लगने लगी। इसे दूर से देखते ही एक निराले अपनेपन से

प.पू. हंसा दीदी तो अपने सोफे से उठ कर थोड़ा आगे तक चले गए... दूसरी ओर पू. इलेशभाई ने **'स्वामिनारायण'** महामंत्र की धुन शुरु कर दी और प.भ. प्रमीतभाई एवं प.भ. देवांगभाई तो उसे बुझाने की कोशिश करने तेजी से बड़ी सीढ़ी लेकर दौड़े... आश्चर्य की बात कि – बिना कुछ नुकसान पहुँचाए वह आग शांत हो गई और मानो छोटे-छोटे दीयों की भांति एक के बाद एक लौ बुझती गई! बाद में **प.पू. गुरुजी** ने बताया कि प्रभु हमें खूब चेतावनी देते हैं कि –

आगे से हम ध्यान रखें कि बिजली के तार इत्यादि खूब सावधानी से जाँच लें व ऐसे फंक्शन्स में 'फायर एक्स्टींग्वीशर्स' का एक्स्ट्रा प्रोवीझन हमेशा रखा जाए। प.पू. पप्पाजी कहते – गुणातीत के सेवक के कार्य में 'स्पष्टता, चौकसई व चिव्वटता' होनी चाहिए। ये तो – प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब जैसी विभूतियाँ स्टेज पर उपस्थित थीं, सो ही सभी की खूब रक्षा हो गई, वर्ना बहुत बड़ा हादसा बन जाता...

अब की बार मुक्तों ने उत्सव में वर्षों की अपनी एक मुराद पूरी होती पाई, जब **पू. मल्कानी अंकल** ने **'मार्गदर्शिका'** यानि – **प.पू. गुरुजी की कथावार्ता का संग्रह** की सी.डी. का अनावरण किया।

बहुत शुरुआत से ही प.पू. गुरुजी जब भी कथावार्ता करते, तो उसे रिकॉर्ड करने नहीं देते थे। कोई रिकॉर्ड करने विनती करता, तो हँस कर टाल देते कि – दिल में उतारो ना! फिर खूब प्रार्थना करने के बाद बहुत मुश्किल से उत्सवों इत्यादि में रिकॉर्डिंग करने की मजूंरी दी। और... काफी समय से हर जगह से कई मुक्तों का संदेश आता रहा कि प.पू. गुरुजी ने जो इतनी रहस्य की गहन बातें खोल-खोल कर समझाईं व सूझ दी है उसकी कैसॅट या सी.डी. हमें मिल जाए... लेकिन इस बात को प.पू. गुरुजी ज्यादा तवज्जो नहीं देते थे।

अब की बार ७५वें प्रागट्यपर्व का उद्घोष करने से पूर्व मानो खूब मिन्नतें करके प.पू. गुरुजी को इस बात के लिए आख़िर मनवा ही लिया... और इसे **'मार्गदर्शिका'** सी.डी. के रूप में प्रस्तुत किया।

साधारणतः इसका अर्थ है – मार्ग दिखाने वाली और... स्कूल में बच्चे इसे कहते हैं – **'गाईड'**।

अध्यात्म में गुरु को फ्रॅईन्ड, फिलोसोफर एन्ड गाईड भी कहा है।

संबंध में आए सभी को अध्यात्म की गहन बातों के मर्म-रहस्य समझा-समझा कर मंज़िल पर पहुँचने का सरल व शॉर्ट कट दिखाना, प.पू. गुरुजी का निरंतर उद्यम है।

फिर भी, उनकी हर एक बात में वचनामृत, स्वामी की बातें व शिक्षापत्री का आधार तो है ही।

साथ ही –

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी से उन्होंने जो कुछ भी प्राप्त किया है, वही वे अपनी बातों द्वारा बता कर हमें गाईड करते रहे हैं – एक आध्यात्मिक गाईड-नर्स के रूप में हमारी परवरिश कर रहे हैं।

इन बातों का रिवीझन करा करना - जुगाली करते रहना अति आवश्यक है। सो, घर बैठे भी हम प.पू. गुरुजी की यह कथावार्ता सुन पाएं, इस हेतु प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्य दिन की शुरुआत करते हुए आज **इस नज़राने की प्रथम 'एम पी थ्री' का उद्घाटन हुआ।**

वक्ताओं के उद्गार के बाद गुणातीत स्वरूपों के आशिष की झड़ी लगी... प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आशिष प्राप्त करने के बाद सत्संग के युवाओं ने प.पू. गुरुजी पर आधारित भजन –

'मानव रूप में है सारथी समर्थ मिला...

एवं

धूम मची रे आजे धूम मची रे, लाडीले लाल की धूम मची रे...'

भजन पर भावमुद्रा प्रस्तुत करके माहौल को और आनंदित बना दिया।

अंत में प.पू. साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी ने सभी को आशिष प्रदान किए... और गुणातीत स्वरूपों की सन्निधी से उत्पन्न अध्यात्म से भरपूर इस सभा का विसर्जन प्रार्थना के साथ हुआ।

उत्सव के बाद **प.पू. ज्योति बहन** तीन-चार दिन 'अक्षरज्योति' में रुके थे; तो दो दिन बाद अमदावाद से जब सौ. दमयंतीबेन पकई का फोन आया, तब उन्हें प.पू. ज्योति बहन ने कहा – ***उत्सव बहुत अच्छा हो गया। गुरुजी ने अक्षरधाम धरती पर उतार दिया था... अक्षरधाम की दिव्य सभा लग रही थी।***

*(सभाओं से प्राप्त मुक्तों के उद्‌गार एवं स्वरूपों के आशीर्वाद समय-समय पर व कई प्रसंगों पर हमें सूझ देते हैं। सो, ऐसी सूझ प्राप्त करने आईए **७ मार्च** - प.पू. काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन, **८ मार्च** – प.पू. गुरुजी की ७१वीं प्राकट्य तिथि, **१३ मार्च** - प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्य दिन एवं **२९-३०-३१ मार्च** – प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्योत्सव निमित्त मुक्तों के उद्‌गारों को निहारें और स्वरूपों द्वारा दी गई आध्यात्मिक सूझ की जुगाली करें...)*

७ मार्च, '०८ ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन

प.भ. रमेशजी (कॅनेडा)

हमें ज्यादा देर तो नहीं हुई, सत्संग में आए सिर्फ १६ साल हुए हैं। १६ साल से हम बाहर रहते हैं। पूरा साल हम बाहर रहते हैं। जब यहाँ आते हैं – गुरुजी के दर्शन करते हैं और नई-नई बात सुनने को मिलती है। जो भी बात मन में लाते हैं, वो **गुरुजी** पहले ही बोल देते हैं। हमें मौका ही नहीं देते बात करने का। **वो हमारी बात समझ जाते हैं, हम उनकी बात समझ जाते हैं... ऐसे गुरुजी हमें कहीं पर भी नहीं मिल सकते। दिन में लाइट जलाओ तो भी नहीं मिलेंगे।** ऐसे गुरुजी हमारे हैं। जब यहां आते हैं, बहुत मन प्रसन्न होता है। ऐसा प्रसन्न होता है, जो कभी नहीं हुआ और... हर साल आते हैं हम। पहले दर्शन करते हैं गुरुजी के और प.पू. गुरुजी का जन्मदिन मनाने तक हम ठहरते हैं; उसके बाद चले जाते हैं।

गुरुजी, कहते हैं कि मिलजुल कर रहो; पंजाब वालों से हमारी भी **यही प्रार्थना है कि हम मिलजुल कर रहें**, इकट्‌ठे आएं और इकट्‌ठे जाएं। यही प्यार से हमारी प्रार्थना। जय स्वामिनारायण!

प.भ. अनिलभाई मणिक (मुंबई)

... मैं दो तीन बार कह चुका हूँ कि दिल्ली आने का होता है तो मजा अलग ही आती है। जैसे लड़की मायके आती है, ऐसा लगता है। काकाजी को तो हमने देखे नहीं हैं, मगर कैसे होंगे वो जरूर पता लगता है; क्योंकि गुरुजी में हमको काकाजी दिखते हैं। अभी तीन फरवरी को आशीष पुरी और प्रियंका की जो शादी हुई, उसमें हमने जो मजा की – ऐसी मजा हमने कभी नहीं देखी। दोनों तरफ से नाचना – ये तो यहीं देखने को मिले और कहीं नहीं हो सकता।

...घर में मेरी कम्पलॅईन्ट रहती है; कभी-कभी कोई बात पर गर्म हो जाऊं, तो कहते हैं कि दिल्ली में तो हमेशा मूड में रहते हो; जब भी तुम दिल्ली मंदिर में होते हो, तो आपका मूड कभी खराब नहीं देखा। घर में

बहुत टाईम गर्म हो जाते हो।

...एक बात करनी है – मेरे को एक जगह (फ्लॅट) लेना है। उसमें जो भी जो संकल्प करके आवे वो उसका काम पूरा होवे ऐसी मेरी महाराज से, काकाजी-गुरुजी से प्रार्थना। और... घर में घुसते ही उसे वो घर न लगे, बल्कि मंदिर लगे...

प.भ. वच्छराजभाई (दिल्ली)

१९८६ की सात मार्च को काकाजी के स्वधामगमन के दर्शन हमने किये हैं; आज २००८ की सात मार्च को अक्षरज्योति की सभा के दर्शन हम कर रहे हैं। गुरुजी की अपार कृपा कहो कि इस दौरान इतने सारे शुभ अवसरों से हम सब के खूब पुण्य जगाए; वर्ना तो हमारी तो कोई औकात ही नहीं कि ऐसे यज्ञों में गुरुजी हम सबको शामिल करते हैं। अपने भाग्य का कोई पार नहीं है। मानो तो बहुत बड़ी बात है।

फॉर्मली मंदिर जाने का फल भी फॉर्मल ही है। लेकिन ये मान कर चलें कि मेरे भाग्य बहुत बड़े हैं कि गुरुजी मुझे याद करके बुला रहे हैं – उसका फल अलग है।

अभी अनिल मासा ने बात करी कि काकाजी के दर्शन तो हमने करे नहीं, तो मुझे अनूप जलोटाजी की वो पंक्ति याद आ गई कि 'राम' से बड़ा 'राम का नाम'! मेरी बात को गुरुजी क्षमा करें, लेकिन काकाजी का जो नाम गुरुजी ने बड़ा किया उसमें सब आ जाता है। **काकाजी से बड़ा काकाजी का नाम! गुरुजी को देखकर हम काकाजी की स्मृति करें और... काकाजी हमारे सारे काम इन्स्टंट करते हैं...** भले हम व्यवहार में उलझे रहते ही हैं, लेकिन दूसरी ओर प्राप्ति का पलड़ा जब हम देखते हैं तो बहुत सिक्योर्ड लगते हैं। मन में एक निश्चिंतता रहती है कि हर्डल्स से निकालेंगे तो वे ही।

...अभी भजन की कड़ी – 'प्रभु वश हो जाएं' सुनी, तो-मन में **ये डर हमेशा रहना चाहिए कि अनजाने में भी हम किसी भक्त की झंझट में ना पड़ें।** हमें उसकी कोई शॉर्टकमिंग नज़र आती भी है, तो उसके लिए हम प्रार्थना करें इससे बड़ा कोई ब्रह्मास्त्र नहीं है।

इस साल का जो कॅलेन्डर है, वह रोज पढ़ना चाहिए कि हम तो प्रगट प्रभु के हाथ की कठपुतलियाँ हैं; वही हम सभी को नचा रहे हैं, कोई कुछ नहीं कर सकता।

प्रगट का ऐसा ज्ञान, जीवन की इतनी सच्चाई, एक-एक चीज गुरुजी खोल-खोल कर सबको समझाते हैं। लेकिन मॅडिकल लाईन में कहते हैं ना कि ऑपरॅशन सक्सेस हो जाए, पर हमारी बॉडी एक्सेप्ट नहीं करे तो? तो भगवान से रोज ये प्रार्थना करनी चाहिए कि हे महाराज! आपकी जो ये शर्त है उसको मैं कभी भुलूं नहीं। 'स्कीम' में कोई चीज लेनी होती है, तो नीचे लिखा रहता है कि 'कन्डीशन्स एप्लाई'। ये कन्डीशन्स हमेशा याद रखनी चाहिए। साथ में महिमा भी इतनी रहनी चाहिए। सिर्फ कन्डीशन्स ही याद करा करें और भक्तों की महिमा ना समझें, वो भी बहुत बड़ी गलती होगी।

...अकसर गुरुजी हमें मौका देते हैं। किसी के यहां सुख में जाने का, किसी के यहां दुःख में शामिल होने का। नाचने का, कूदने का, आनंद करने का, दुःख बांटने का – वो कभी हम चूकें नहीं और सत्संग की गरज जितनी है उससे ज्यादा हमेशा बनी रहे। **गुरुजी के साथ जो जीता है उसको पता है कि गुरुजी का दिल इतना बड़ा है, शायद कोई तुलना नहीं कर सकते।** तो आज के दिन ये दो बातें हमेशा याद रखें।

प.पू. गुरुजी

सब गोपियाँ कृष्ण की दीवानी थीं; लेकिन कृष्ण राधा के पीछे दौड़ते दिखाई पड़ते... हर गोपी को होता था कि कृष्ण हमारे पीछे भी ऐसे लट्टू बने। वैसे सत्संग में भी हमें रहता होगा कि हम तो साधु के पीछे लगे हैं, लेकिन साधु हमारी तरफ कब देखेगा। जगजीत सिंह की गाई एक गज़ल में आता है न कि – **सब पे साकी की नज़र हो, ये जरूरी तो नहीं.....**वो तो किसी विरलों के ऊपर होती है।

लेकिन काकाजी ने इसका भी तरीका बताया। मुक्तों के पीछे, मुक्तों की सेवा में, मुक्तों के प्रति दिव्यभाव में खो जाकर काकाजी ने शास्त्रीजी महाराज - योगीजी महाराज को बस किये। काकाजी ने ऐसी तपस्या - व्रत या ऐसी कोई साधना करी हो, वह किसी को भी नज़र नहीं आयेगा। पर, इन्होंने भक्तों की - वो कैसे भी हों, वह देखे बिना महिमा समझ कर सेवा करी है। मैंने एक बार बात करी थी कि – एक सेवक के आर्थिक हालात ठीक नहीं थे। योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी के यहाँ 'एग्री' में जॉब पर रखवा लिया। काकाजी के मन तो 'एग्री' बापा की ही थी; जो वे कहें वो करना है। पर, काकाजी - पप्पाजी सब आ जायें फिर वो ऑफिस में आए और अपने ढंग से ही काम करता। एहसान भी ना माने कि ओहो! मेरी कोई काबीलियत नहीं, पर बापा के कहने से दादुभाई ने जॉब पर रख लिया। अगर इसे कुछ कहें भी, तो ऊपर से काकाजी और पप्पाजी को खड़काए कि बापा की 'एग्री' कहते हो, तो 'संबंध' देखो। पर, तब भी काकाजी-पप्पाजी ने उसका कुछ देखा-करा नहीं। हम जैसे तो टर्मिनेट कर दें। रागड़े ताना करना कि – **'संबंध मुक्तों का देखें** - यह आसान है'; लेकिन इनकी क्रिया स्वभाव कि – फलांना ये करता है, ढीकना ये करता है वो हम देखते ही रहते हैं। आख़िर यूं भी देखेंगे कि ये तो संत को परेशान करता है। हमें वो क्यों देखना? काकाजी के - पप्पाजी के हम जो कहे जाते हैं इन्हें सबसे पहले ये सीखने जैसा है। ऐसा नहीं कि काकाजी ने सिर्फ ये बातें करी हैं, ऐसा जीवन जीकर इन्होंने दिखाया है। लेकिन,

ये बातें उन्हीं के लिए हैं, जिन्हें प्रभु को वश करने हो। प्रभु हमारे आगे - पीछे नाचें यूं चाहने वालों के लिए हैं। प्रभु की जिसको परवाह ही नहीं है उसके लिए तो ये बात है ही नहीं।

ठीक है – 'आया राम गया राम!' बीच में मंदिर आ गये तो आ गये!

पर, **जितने भक्तों में रसबस हो जायेंगे इतने प्रभु अपने काम ऑटोमॅटिक सुलझाते जायेंगे, ऑटोमॅटिक।** क्यों! **भक्तों में रसबस होने के लिए माईन्ड को छोड़ना पड़े और काकाजी ने बोला है जैसे ही कोई माईन्ड को छोड़ देगा चैतन्यभूमिका ऑटोमेटिक चालू हो जायेगी; कोई प्रयास नहीं करना पड़ेगा।**

अभी ज्योत से पत्रिका आई है। ज्योत की पत्रिका के पहले पॅज पर पप्पाजी का कोई लेटर या पप्पाजी ने कुछ लिखा हुआ हो वो हमेशा आता है। मैं उसको पहले पढ़ लेता हूं। उसमें आज **पप्पाजी** ने लिखा हुआ है कि –

गुणातीत समाज के संतों और मुक्तों के कॉन्टेक्ट में जो कोई आ गया, वो सुखी होने के मार्ग पर – उसके चैतन्य के शुद्धिकरण के मार्ग पर चल पड़ता है।

देखो, कितनी बड़ी बात है यह? चैतन्य के शुद्धिकरण के लिए कितनी तपस्या, साधना, आराधना – सब कुछ करना पड़ता है। उसके बजाय पप्पाजी ने लिखा है कि जिसको सुखी होना हो, उसके लिए ये संदेशा है कि

ऐसे मुक्तों के कन्टेक्ट में रहें। मैं अंकल को जो बुलाता रहता हूँ, वो इसीलिए बुलाता रहता हूँ। क्या मुझे नहीं पता कितनी दूर से आना पड़ता है? पर, जितने यहां ओत-प्रोत हो जाएं उतने दूसरे बंधन – मतलब परेशानियां ऑटोमॅटिकली टलती जाएंगी।

पर यहां बीच में आ जाती है, अपनी सोच कि – ऐसे थोड़े होता है? मैं कई बार कह चुका हूं कि मुझ में और तुम्हारे में बस यहां फर्क पड़ जाता है। बापा की कृपा कहो, पूर्व का संबंध कहो – जो कहो – जो समझो वो, मुझे काकाजी-पप्पाजी-योगीबापा-स्वामिजी कुछ बात करें; मैं नहीं कहता कि मुझे इनकी हर बात एक्सेप्ट हो गयी थी, पर इतना जरूर था कि भले ही मुझे आज समझ नहीं आती है, लेकिन बात तो इनकी ही सही रहेगी। इसलिए फॉलो करो, मन ना माने तब भी फॉलो करो; आजमा कर तो देखो।

...**'बने बंसी' का मतलब कि हम जो बोलें, वो प्रभु की ही आवाज हो। इसको बोलते हैं – 'बंसी'। लेकिन, वो बंसी होने के लिए खोखला होना पड़ता है।** बंसी बनती तो है लकड़ी से; लेकिन बीच का सारा मसाला निकाल दें और... जब वह खोखली हो जाए – तब! इस तरह **हमें खोखला होना पड़े। हम मानें कि अपनापन भी रखें ('स्व' भी पकड़े रखें) और हम बंसी बनें – वो तो भूल ही जाएं।**

...अबकी बार नए 'ऑल्फाबेट' का कार्ड निकला है। **एकांतिक की** जनरल **व्याख्या** क्या? धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति – चारों से युक्त हो वह – एकांतिक! जबकि – **योगीजी महाराज ने** बात **करी और काकाजी ने पकड़ी कि भक्तों के साथ आपस में एकता से जीए वह – 'एकांतिक'।** नई बात आ गई ना? इसी रास्ते पर हम चलें...

८ मार्च, २००८ प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि की सभा

प.भ. दलजीत सिंहजी (जगरांव)

८ मार्च, अबकी प.पू. गुरुजी का जन्मदिन। मेरे पास शब्द नहीं हैं गुरुजी की महिमा बयान करने के लिए। महाराज ने इतना दे दिया कि वह शब्दों में बयान नहीं हो सकता। मैं एक मिडल क्लास फेमिली से हूँ। नॉर्मल जिन्दगी में हमारी जरूरतें–बच्चे पढ़ जाएं, बच्चे जॉब पर लग जाएं, घर हो – ये सब कुछ मुझे महाराज ने मंदिर में आने के बाद दे दिया। कोटि-कोटि धन्यवाद गुरुजी का।

सबसे पहले – गुरुजी जब पंजाब आए थे, तो मैंने गुरुजी से कहा कि बेटी बी.एससी. कर गई है, बी.एड. करना है। बी.एड. में एडमिशन मिलना बहुत मुश्किल है। अब तो पंजाब में बहुत बी.एड. कॉलेज हो गए, तब कॉलेज नहीं थे। गुरुजी ने पूछा इसका एग्ज़ाम कब है? मैंने कहा ६ महीने बाद इसका एग्ज़ाम होगा। गुरुजी ने कहा जब मैं नेक्स्ट टाईम आऊंगा टिंकू मास्टरानी होगी। बी.एड. में ६० हजार स्टुडन्ट्स ने एप्लाई किया था। ३ हजार स्टुडन्ट्स उन्होंने रखने थे। १५०० रिज़र्व कॅटॅगरी में, १५०० नार्मल। टिंकू को एड्मिशन मिल गया। महाराज का कोटि-कोटि धन्यवाद। **ये चमत्कार नहीं है, ये गुरुजी की कृपा है।**

बी.एड. कराने के बाद गुरुजी से पूछा कि इसे क्या करवाना है? गुरुजी ने कहा एम.एड. करा दो। तो हमने एम.एड. में एप्लाई कर दिया। जिस दिन इसका इन्टरव्यू था, हमने एक ही कॉलेज में एप्लाई किया तो उन्होंने जवाब दे दिया कि बी.एससी. और बी.एड. वाले को एम.एड. में एड्मीशन मिल ही नहीं सकता।

यूनिवर्सिटी का रूल ही नहीं है। हम जब वापस आ रहे थे, तो टींकू ने मुझे एक ही बात कही कि – **गुरुजी ने कहा है तो एम.एड. होऊँगी ही होऊँगी** पापा। महाराज ने कैसे सेट किया महाराज जाने, तीसरे दिन यूनिवर्सिटी से लेटर आ गया कि आप आकर एड्मिशन ले लो! **अपने भक्त के लिए महाराज ने यूनिवर्सिटी का रूल ही चेईन्ज कर दिया!**

फिर यू.जी.सी. क्लीयर करनी थी, ये तो अभी की बात है। इसने गुरुजी को लिख कर दिया कि – गुरुजी मैं यू.जी.सी. क्लीयर नहीं कर सकती। जनरल केटेगरी में यू.जी.सी. क्लियर करना इम्पॉसीबल है। गुरुजी ने एक ही बात कही कि आपका एग्ज़ाम कब है? जब आपका एग्ज़ाम हो, आप ५ मिनिट धुन करना; काकाजी आपके पेन पर विराजमान हो जाएंगे। यू.जी.सी. क्लीयर हो गई! महाराज ने अपने भक्त की अर्ज सुन ली। कितनी कृपा महाराज ने की?

घर की बात करता हूँ। घर बनाना था; घर कैसे बनेगा? पैसा चाहिए, महाराज ने कृपा कर दी। वाकई इट इज़ ए मीरेकल। मैं अब भी सोचता हूँ कि मेरा घर कैसे बन गया? रियालिटी है; मेरा एक जमीन का टुकड़ा था। मैंने सोचा, महाराज! अगर जमीन बिक जाए तो घर बन जाएगा। उसके साथ की जो जमीन है, अभी भी – आज भी ८ लाख रुपए से ज्यादा कोई नहीं दे रहा। महाराज ने कृपा की; मेरी वो जमीन १५ लाख रुपए की बिक गई। जिसने खरीदी है, वो कहता है मुझे खुद पता नहीं मैंने तुझे १५ लाख कैसे दे दिए? कितना महाराज ने मेरे लिए किया? कहाँ था मैं, कहाँ से उठाकर कहाँ रख दिया। महाराज को कोटि-कोटि धन्यवाद।

रात को बात चली कि श्री काकाजी को नहीं देखा – काकाजी के दर्शन नहीं किए। **आज महाराज ने मूर्ति लगा दी! इधर से देखो पप्पाजी, सामने काकाजी, उधर से देखो स्वामिजी और...थोड़ी गरदन नीचे करो तो गुरुजी। हमें ये कहने की जरूरत नहीं, सभी एक रूप हैं बस देखने की निगाह चाहिए...**

प.भ. रमेशजी (जगरांव)

...**हम सनातनी आदमी** – सब दूसरे धर्मों को मानते हैं। **अब तो स्वामिनारायण धर्म ही है हमारा धर्म।** साथ वाले पार्क में गुरुजी की डायमंड जुबली मनाई थी। मैं अपनी बात बताता हूँ; मैं हर जगह गया। कई संतों के पास गया, पर मेरा मन नहीं जमता था। जब 'चाचा चूरण' (अक्षरनिवासी प.भ. मनोहरलालजी) ने बात बताई, तो मन कर आया कि जाकर देखें। आ गए हम सब इधर; जगरांव से बस भर कर आए थे। उस वक्त आकर लगा कि हां इधर कुछ है। पर, पूरा मन नहीं बैठा। पहली नज़र वाली बात हो जाती है न? उसके बाद और दो तीन बार आए, फिर लगा कि हां, दूसरों में और यहां में फर्क है। उसके बाद जब आने लगे तो यहां की बात ही निराली लगी। **लालच वाली कोई बात नहीं, भाइयों में अपनत्व और...ऐसा कहीं नहीं मिलता। ऐसा कहीं न मिला है न मिलेगा** – मेरी समझ में, बाकी बात अलग है। मैं तो गुरुजी से यही प्रार्थना करता हूँ कि हमें इसी तरह आशीर्वाद दिए रखें।

हम ठहरे दुनियावी आदमी, घरेलू आदमी, लालची आदमी। आसरा चाहिए – हर किसी को कि हाँ भई, हमारा काम करे जाओ, करे जाओ, करे जाओ। काकाजी ने कहा है कि हमारा तो देना बैंक है। आप देते रहे हैं; लेने वाली कोई बात नहीं...

पू. यज्ञप्रियस्वामी

...गुरुजी की कृपा से जब भी प्रदक्षिणा करने जाता हूँ, मंत्र लेखन करता हूँ, धुन करता हूँ, तो हमेशा भगवान के बारे में कुछ न कुछ प्रश्न आते हैं कि महाराज आए; महाराज क्यूं आए? क्या संदेशा लाए? किसके बीच में बांटा? महाराज का संदेशा जो है वो धीरे-धीरे गुरुजी के द्वारा हमें मिलता है। जितना हम एक्सेप्ट करते हैं, डाइजेस्ट करते हैं उतना फायदा मिलता है।

...सौराष्ट्र – गुजरात की धरती थी और काठियों, ब्राह्मण और कई अलग-अलग व्यक्ति थे, जो महाराज के संपर्क में आए। उनको महाराज ने अपना संबंध दिया और अपनी बात उनको करी। वचनामृत आज हम सबके बीच में है। उसमें महाराज ने महिमा ही गाई है; सब पहलू की महिमा है – संत समागम की महिमा है, भजन की महिमा है। उसमें महाराज ने दोष टालने की बात करी है। सब कहा है, पर वो समझने वाले कितने थे? विचार करता हूँ कि आज हमें कोई बोले कि फर्स्ट स्टान्डर्ड के स्टुडन्ट के साथ एक साल बिताओ, यू स्टडी विथ धेम। तो हम उन बच्चों को कैसे बताएंगे कि भई हम भी आपके बीच के हैं। उनको कैसे ये एहसास कराएंगे कि हम आपके जैसे हैं। वो हमें देखेंगे, बड़ा देखेंगे – इतना बड़ा है। वे विचार में पड़ेंगे, जब हम उनको कहेंगे कि तुम जितना होमवर्क एक साल में करते हो, उतना मैं एक दिन में कर दूंगा। यूं कई बार विचार आता है – जब गुरुजी धुन करने बैठते थे। मेरा पहले से ऐसा अंग है कि एक मनका फेरूं तो एक बार 'स्वामिनारायण' बोलूं; आराम-आराम से करने का। गुरुजी का ऐसा अंग है कि जोरदार धुन हो। अभिषेकभाई और ये राकेश भाई जैसे भी एकदम बढ़िया धुन करते हैं। ऐसी धुन गुरुजी को पसंद है। हाँ, अब गुरुजी को देखते हैं, तो गुरुजी आंखें बंद करके आराम से बैठ जाएंगे। यहाँ वो प्रसंग मुझे मदद कर गया कि फर्स्ट स्टान्डर्ड वाले को हम यही बोलेंगे न कि एक साल में जो तू होमवर्क करेगा, मैं एक दिन में करके छोड़ दूंगा। ऐसी ही गुरुजी की धुन है। काकाजी महाराज ने पूछा था कि तुम्हारी एक माला फिरेगी और मेरी जो एक माला फिरेगी – उसमें कितना फर्क है? फिर खुद बोले थे – उसके पुण्य में, उसकी शक्ति में लाख माला का फर्क है। वो बात मुझे बहुत टच कर गई।

...महाराज भी आए; सबके बीच में रहे, काठियों को जंचे इसके लिए उन्होंने घुड़सवारी सीखी, महाराज ने यज्ञ करवाए, महाराज ने गांव-गांव पधरामनी करी, सब किया पर एक ही मक़सद – एक ही संदेश सबको दिया। जितना जिसने लिया, उसको उतना फायदा हो गया। काकाजी महाराज ने भी ऐसा संबंध देखा।

भगवान स्वामिनारायण का एक प्रसंग मैं बताऊंगा – 'महाराज गढ़पुर में सभा में बैठे थे, सब संत लोग – सब भक्त लोग बैठे थे। महाराज और संतों के बीच प्रश्नोत्तर हो रहा था। महाराज ने पूछा कि सबसे ज्यादा मान किसको है? तो महाराज स्वयं बोले कि सबसे ज्यादा मान तो राजा को होना चाहिए, क्योंकि उसको सब जाकर प्रणाम करते हैं, उसके आगे सब झुकते हैं, उसको सब सलाम करते हैं। फिर बोले कि राजा भी ब्राह्मण को सलाम करता है, ब्राह्मण का मान-सम्मान करता है। सो, सबसे ज्यादा मान ब्राह्मण को होना चाहिए। फिर बोले कि ब्राह्मण भी हमारे साधुओं को प्रणाम करते हैं। अतः सबसे ज्यादा मान साधुओं को होना चाहिए। महाराज के पास साधु बैठे थे, वे सब अंतर्दृष्टि करने लगे। यूं महाराज ने इस प्रकार से संतों को अंतर्दृष्टि में डाल दिया। पर, फिर महाराज बोले –

'ये सब साधु हैं वो मुझे प्रणाम करते हैं, मेरे चरण छूते हैं, तो सबसे ज्यादा मान मुझे ही है; अब ये मान को तोड़ने के लिए जब भी मेरे पास कोई साधु आएंगे, तो मैं खड़ा हो जाऊंगा और उनका सत्कार करूंगा। इससे मेरा मान कम होगा।'

ऐसा उन्होंने व्रत ले लिया। ये व्रत चलने लगा। महाराज जहां भी हों और संत लोग मंडल में दर्शन करने को आएं, तो महाराज खड़े हो जाते। सब संतों को एक झिझक होती, शर्म आती कि महाराज यूं खड़े हो जाते हैं! पर, महाराज ने जो ठान लिया वो आसानी से छोड़े ऐसा हो ही नहीं सकता। मुक्तानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी – सबने कहा – महाराज! आप ऐसा रहने दो। महाराज ने बोला – नहीं, व्रत लिया तो लिया। फिर एक बार गुणातीतानंदस्वामी एक संत को साथ में लेकर महाराज का दर्शन करने को गए थे। दोपहर का समय था, महाराज भोजन ले रहे थे। भोजन लेते-लेते महाराज खड़े हो गए। स्वामी बोले – आप क्यों खड़े हो गए? महाराज बोले-हमारा ऐसा व्रत है कि संत लोग आएं, तो हम खड़े होकर सत्कार करेंगे। स्वामी को हुआ कि – अहो! महाराज अपनी थाली छोड़कर हमारे लिये खड़े हो गए! स्वामी ने कहा कि – महाराज आप ऐसा मत कीजिए, ऐसा क्यूं करते हैं? महाराज ने कहा मैंने सभा में ऐसा व्रत लिया है। स्वामी ने महाराज को हाथ जोड़कर विनती करी कि –

महाराज! **आप तो दिव्यमूर्ति हो,** आप क्यों ऐसा करते हैं? हमें शर्म आती है।

तो, महाराज बोले कि –

'सभा में मुझे किसी ने कहा नहीं कि – हम दिव्यमूर्ति हैं, हमें मान नहीं है। चलो अभी ऐसा नहीं करेंगे, अभी व्रत छोड़ देंगे।'

...कहने का मतलब यह है कि गुरुजी ने कल कहा कि – बंसी बनना है। बंसी बनने के लिए खोखला बनना है। खोखला बनना है, तो महाराज की एक बात है कि –

'दास का दास होकर जो रहेगा सत्संग में, भक्ति उसकी भली मानूँगा, रमूगा उसके रंग में...'

काकाजी महाराज की बात है। गुरुजी के साथ ताड़देव जाने का मुझे एक बार लाभ मिला। ताड़देव में एक रात रुके भी थे। वहां यह प्रसंग सुना था कि – एक बार एक व्यक्ति सी.आई.डी. करने ताड़देव आया। शाम का समय था, सभा समाप्त हुई, भोजन की तैयारी होने लगी। वो व्यक्ति यही देखने के लिए आया था कि ताड़देव में क्या प्रवृत्ति होती है? तेजोद्वेषी (लोग) ताड़देव के बारे में बहुत बातें चलाते थे। काकाजी ऐसे पुरुष कि व्यक्ति के आने की मंशा वो जान जाते थे। पर, काकाजी ने उसकी आवभगत करी। उसकी नज़र चारों ओर घूमे। कोई नॅगेटीव बात उसको दिख जाए, तो उसकी मंशा थी कि बाहर जाकर उसका प्रचार करना है। काकाजी तो सब जान गए थे, फिर भी काकाजी ने रसोई की सेवा करने वाले मुक्तों को यही कहा कि –जैसे वीनुभाई, प्रभुदासभाई और डॉक्टर यानि – महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी और डॉक्टरस्वामी को भोजन परोसो, वैसे ही इस भक्त के लिए – उसी भाव से भोजन परोसना। **संबंध देखने की काकाजी की वो दृष्टि थी। ऐसी दृष्टि हम सबको भी रखने की है।** आज इस मंदिर में – गेट के अन्दर कोई आता है, तो ऐसी नीयत से तो आता ही नहीं; वो तो हमेशा पूज्यभाव की दृष्टि से ही आता है। तो हमको भी ऐसी भावना रहे कि हम गुरुजी को सर्व कर रहे हैं – काकाजी, पप्पाजी को सर्व कर रहे हैं। **महाराज ने कहा है कि ऐसा संत समागम बड़ा दुर्लभ है। काकाजी महाराज ने गुरुजी के रूप में ऐसे संत दिए हैं।**

...अबकी बार **अनुपम मिशन के अश्विनभाई और एन.आर.आई. मंडल लखनऊ से दिल्ली आने वाला था।** यहां से **अमदावाद के लिए उनकी कनेक्टिंग फ्लाईट थी।** सुबह से वे लखनऊ से चले हुए थे। और... उनका भोजन वगैरह का बीच में और कहीं कोई प्रबंध नहीं था और... आजकल की लो कॉस्ट की एयरवेज़ में कुछ देते भी नहीं हैं। तो, **गुरुजी ने एयरपोर्ट ले जाने के लिए उनके नाश्ते का प्रबंध कराया था।** सबके लिए नाश्ते के पैकेट्स बनवाए और बोले कि मैं भी एयरपोर्ट आऊंगा। ये सब एरेंजमेंट हो सकता है सेवक जा सकते हैं, सब बांट भी सकते हैं। पर, **गुरुजी बोले कि – मुझे तो एयरपोर्ट आना ही आना है।** वहां, लखनऊ से आने वाली फ्लाईट लेट हुई। एयरपोर्ट पर गुरुजी आधा घंटा प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठे रहे और...उसके बाद रेलिंग पकड़ कर आधा घंटा और खड़े रहे। वहाँ इतनी डिस्टर्बन्स थी; लोग अपनी ट्राली वगैरह ले जा रहे थे... इतने लोग वहां रिसॅप्शन के लिए खड़े थे। गुरुजी को बोलें भी कि – आप लोग साइड हो जाओ। वो सब कोई परेशानी गुरुजी ने गिनी नहीं। करीब एक घंटा एयरपोर्ट पर उनकी वेट करी। आफ्टर धॅट, वो सब डिस्ट्रीब्युशन कराया। तब गुरुजी ने बताया था कि **यह मेरी एक सेवा है। मैं आकर सिर्फ खड़ा ही हूँ, पर वह इस ग्रुप के साथ मेरी आत्मीयता है।** यूं गुरुजी खास उनके लिए एयरपोर्ट पर जाकर एक घंटा वेट करते रहे। **ऐसे निर्मानी संत हमें मिले हैं।**

...गुरुजी ने सबका स्वीकार किया है। कोई भी मंदिर में आता हो। चाहे वो अमीर हो – गरीब हो, चाहे विचित्र प्रकृति का हो, चाहे वो पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़ हो – जैसा भी हो; उन सबका स्वीकार किया है।

यह बात महाराज को अंदर में रखे बिना बनती नहीं है। चाहे आप कितना भी अच्छा-अच्छा व्यवहार सबके साथ रख लो, पर महाराज अंदर में बैठे हैं यह नहीं माना हो, तो सबका स्वीकार तो नहीं होता है।

तो मैं महाराज को, गुरुजी से यही प्रार्थना करता हूं कि महाराज हमारे अंदर भी हैं – देखते हैं – ये बात हमारे में दृढ़ हो और अगर ये न हो पाए तो गुणातीतानंदस्वामी की बात में है कि जैसे हाथ में पानी की बूंद हो, वो जितनी क्लियर दिखती है ऐसे ही संत हमको इतना क्लियरली देख रहे हैं, इतना तो कम से कम विश्वास दृढ़ करें ही करें – ऐसा गुरुजी के प्रागट्य दिन पर आशीर्वाद मांगता हूँ...

प.भ. भाविनभाई दवे (अमदावाद)

...लास्ट ईयर थ्री हॉलीडॅज़ साथ में आए थे, तो हमारी फेमिली में सब ने ये डिसाईड किया था कि सोमनाथ और जूनागढ़ दर्शन कर आएंगे। ऑफिस में से मैंने गुरुजी को फोन करा कि फ्राईडे-सेटरडे-सण्डे हॉलीडेज है, तो अभी मेरा सन्टेन्स खत्म हो उससे पहले गुरुजी ने कहा कि 'यु आर मोस्ट वेलकम - आ जाओ'। मैं तो एकदम ठण्डा हो गया कि हम लोगों ने तो प्लानिंग करी थी कि सोमनाथ-जूनागढ़ जाना है। और...गुरुजी इतने प्यार से बुला रहे हैं। क्या करूं? मैं बोल ही नहीं पाया और कॉल ब्लैंक हो गया। फिर मैंने कहा कि गुरुजी सबने डिसाईड किया है कि **जूनागढ़-सोमनाथ** जाना है; टिकिट बुकिंग वगैरह भी हो गयी है। तो गुरुजी ने बताया कि – **'वहां भी वॅलकम'।** यह सन्टेन्स मुझे परफॅक्ट याद है कि 'वहां भी वॅलकम'। फिर हम सोमनाथ वगैरह घूमे - करे और वहां से जूनागढ़ मंदिर में गए। वहां मन में ऐसा हो गया कि

गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति को दंडवत् करें। तो जैसे ही दंडवत करा और खड़ा रहा। तो मुझे गुरुजी का वो सेन्टेंस याद आ गया कि – 'वहां भी वॅलकम'। मैंने पॉकेट में हाथ डाला और मोबाइल निकाला और नंबर डायल करूं, उससे पहले तो गुरुजी की रिंग आ गयी। भाविन, 'जय स्वामिनारायण' – कैसे हो? मुझे फील हुआ कि **गुणातीतानंदस्वामी को जो दंडवत् करा, वो गुरुजी को पहुंच गया...**

...मैंने योगीजी महाराज की सत्संग की कथाएं पढ़ी थी। उसमें देवचकली का एक प्रसंग था। इसका निष्कर्ष ऐसा है कि हम कोई भी काम करें, तो देवचकली के फड़कने की भाँति हमारी निष्ठा दृढ़ होनी चाहिए। यदि हमारी निष्ठा दृढ़ है, तो फिर कोई भी काम है वो संत करवा ही देते हैं।

मैं कोई ज्ञानवार्ता नहीं समझता, पर एक बात एकदम पक्की है कि गुरुजी जो बोलें वो पक्का रखना है। वो कर लेते हैं, तो बाकी की सारी चीजें आ जाती हैं और इस बात में पू. दीदी बहुत हेल्प करते हैं। पू. दीदी बार-बार बोलते हैं कि – भैया, गुरुजी जो बोलते हैं वह उसी मॉमेंट पर कर लें, तो खूब फायदा हो जाएगा; बाद में सोच कर करोगे तो वॅल्यू नहीं रहेगी। **दीदी जब इतनी सूझ देते हैं, गुरुजी इतना करते हैं और ये कन्सॅप्ट इतना पक्का है, तो हम कोई ज्ञानवार्ता में नहीं जाएं। एक चीज एकदम पक्की पकड़े रखें कि गुरुजी जो बोलते हैं उसमें सारा निचोड़ आ गया।** गुरुजी जो कहें वो तुरंत – वो मोमेंट पर कर लें। तो जिसके लिए हम यहाँ पर आए हैं, वो सारा गुरुजी पूरा करवाएंगे। उसकी एक छोटी एग्ज़ाम्पल भी मैं देता हूँ। गुरुजी की एक छोटी बात मैंने मानी थी। इससे गुरुजी इतने राजी हो गये कि आगे-आगे जो होता गया – अभी मैं आपको बता नहीं सकता कि बिज़नेस और प्रोफेशन कितने कॉम्पीटेटिव हो गए हैं – उसमें कितनी क्राइसिस और कई कितने लोग जॉब से निकाले जा रहे हैं, तब मुझे इन्क्रीमेंट के साथ ऑफर आती है। यानि, **गुरुजी जो बताए वो वही मोमेंट पर कर लेना फिक्स रखना है।** उसके अलावा मुझे कुछ पता नहीं है।

आज गुरुजी को थैंक्स कहना है... ये ९६-९७ की बात है, जब चेतना आई.सी.यू. में एड्मिट की गई थी और पल्स १८८ हो गई थी। उस टाईम पर मैंने बहुत प्रार्थना करी थी और गुरुजी को याद करा था। डॉक्टर ने तो बताया था कि शी कॅन नॉट सर्वाइव ऑल्सो – वो कंडीशन है। तो गुरुजी हमारी कैसी रक्षा करते हैं? मैंने वो क्रिटिकल टाईम पर सिर्फ गुरुजी को खूब याद करा था कि इसे कुछ हो नहीं जाए; मैं गुरुजी के दर्शन कर आऊँगा। सिर्फ इतना दिल से निकल गया था। सच्चे दिल से करी ये प्रार्थना मानो गुरुजी ने सुनी और चेतना एकदम क्योर हो गई – उसे कुछ नहीं हुआ। दूसरा – २००१ में भूकंप आया था, तब हमारी बिल्डिंग तो एकदम पुरानी थी और...इतना जबरदस्त भूकंप था कि हमारे बाजू की दो बिल्डिंग्स गिरती हुई हमने हमारे सामने देखी थी और हमारी बिल्डिंग भी टोटल वाईब्रेट हो रही थी। पर, **'गुरुजी आप इससे प्रगट रहना'** – यूं बोल कर दीदी ने गुरुजी की एक मूर्ति हमारे घर पर आशीर्वाद के साथ तिलक करके दी हुई है। उस मूर्ति में से दादू को व्हाईट कलर का तेज निकलता हुआ दिखाई दिया और...मानो एक सुरक्षा चक्र से पूरे फेमिली की रक्षा हो गई! यूं, संत हमारा इतना सारा कर सकते हैं; तो मैं तो एक ही चीज मानता हूं कि **हम सबको हर बात में गुरुजी जैसे संत जो कहें, वो उसी मोमेंट पर कर लेना चाहिए।** बस वो एक चीज पकड़नी है, गुरुजी सबको ऐसा करवा दें – ऐसी प्रार्थना।

प.भ. नरेन्द्र शर्माजी (जगरांव)

...जब कोई भी बात करते हैं, और... काकाजी की बात जब तक न हो, तो लगता है कि बात अधूरी-सी है। काकाजी के दर्शनों का हमने लाभ लिया है। किया कुछ नहीं हमने, सिर्फ दर्शन किए हैं, उनके पास बैठे हैं। कई बार सभा एटेंड की है उनकी और आज गुरुजी के सान्निध्य में हम बैठे हुए हैं और... सारे हरिभक्त कहां-कहां से आए हुए हैं – उन सबमें काकाजी का ही रूप दिखाई दे रहा है। अगर ये बात सच न होती, तो आज हम यहां होते ही नहीं। काकाजी जब स्थूल शरीर से विदा ले गए, तो लगा कि अब क्या होगा? लेकिन **काकाजी तो एक शाश्वत सत्य हैं। ट्रुथ शाश्वत् होता है, वो हमेशा यही रहा है, चाहे वर्तमान, भूत और भविष्य – किसी भी टेन्स में सुनें। इसी तरह अब ये अनुभव हो रहा है कि काकाजी तो हमेशा ही हैं...** काकाजी की कृपा तो अपार है और उनकी दया का तो पार ही नहीं पाया जा सकता। उसका लिमिटलेस अनुभव मैंने अपने जीवन में किया। उसके बाद जीवन में परिवर्तन आ गया। शब्दों में तो 'दयालु' सुनते हैं। 'दयालु' एक शब्द है, लेकिन उससे प्राप्ति होनी ये हमने अपने जीवन में देखा...

पर हम भूल जाते हैं कि आज स्वरूप प्रगट नहीं होता, तो हम यहां होते ही नहीं। जब काकाजी ने विदा ली, दरअसल तो हम भजन में कहते हैं कि– **'गुरुजी की भेंट दी है।'** ये एक बहुत बड़ी कृपा नहीं, **हमें संरक्षण दे गये वो और अपना रूप दे गए हैं ...**गुरुजी ने हमें पूरा संभाल कर रखा हुआ है। गुरुजी भले ही कुछ भी कहते रहें, लेकिन एक बात श्योर है कि **यहां इन्श्योरेन्स हो चुकी है हम सबकी।** प्रीमियम क्या है इसका? बहुत छोटा है कि – हम मंदिर आएं और गुरुजी की बात सुनें। वो तो बहुत ही 'लकी' हैं जो सेन्ट-परसेन्ट गुरुजी की आज्ञा का पालन करते हैं; उनके तो कर्मों का पार ही नहीं है। फिर भी डिस्करेज़ नहीं होना चाहिए। साधु के दर्शन होना, प्रगट स्वरूप के दर्शन होना, काकाजी के दर्शन होना ये बड़ी कठिन बात है...

हमें कृतज्ञ होना चाहिए काकाजी के प्रति, गुरुजी के प्रति। उन्होंने इतनी कृपा करके हमें आशीर्वाद दिया। तो आज मैं गुरुजी के प्रागट्य दिन पर पुनः आप सबको बधाई देता हूँ जो कि हम गुरुजी की गोद में बैठे हुए हैं। और... प्रभु से यही प्रार्थना है, गुरुजी से प्रार्थना है, काकाजी से प्रार्थना है कि हम जैसे भी हैं, हमें संभाले रखना।

गुरुजी ने कल खोखला होने की – बंसरी की बात की। बंसरी अपने आप खोखली नहीं होती। उसे भी कोई करता है। **गुरुजी आप हमें खोखला कर दो।** आज प्रागट्य दिन पर हमारी ये प्रार्थना है। **हम खोखले हो जाएं और आपकी आवाज, काकाजी की आवाज, स्वामिनारायण की आवाज हममें से निकले। हम कौन थे स्वामिनारायण को जानने वाले? आपने - काकाजी ने हमें उनका परिचय कराया।**

मेरी हरिभक्तों से प्रार्थना है कि श्रद्धा, विश्वास, दिल और चेष्टा से हम जुड़े रहेंगे, तो हमारा कल्याण ही कल्याण है और गुरुजी, आप हमें अपनी शरण से कभी दूर न करें। हमारी गल्तियों को क्षमा करें और हम जैसे भी हैं, उसी हालत में हमें स्वीकार करें...

प.भ. परेशभाई महेता (दिल्ली)

सर्वप्रथम आज हम गुरुजी को धन्यवाद करें कि वे हमें ऐसे मौके देते हैं, जो हम साथ में बैठ कर आनंद करते हैं। ये मार्च का गुरुजी का पहला बर्थ-डे मना रहे हैं...१३ मार्च १९९६ को मेरी बड़ी बिटिया यानि

'आस्था' का बर्थ हुआ था। गुरुजी का बर्थ-डे मनाने के लिए फेमिली से सभी यहां आए थे और मैं हॉस्पिटल में था। जब कोई मुझे वहां पर रिलीव करने आया और मैं यहां आया तो मैं रास्ते में सोचता हुआ आया था कि गुरुजी को पुछूंगा कि कोई अच्छा-सा नाम देंगे। अभी इस गेट से एन्टर ही हुआ था और पीछे समाधि स्थान से गुरुजी कुछ हरिभक्तों के साथ आ रहे थे। अभी तो मैं 'जय स्वामिनारायण' ही करूं, उससे पहले ही गुरुजी ने कहा परेश मैंने दो नाम सोचे हैं 'आस्था और फाल्गुनी'; तेरे को जो पसंद आए रख लेना। मेरे पास कहने को कोई शब्द ही नहीं थे। तो **गुरुजी तो अंतर्यामी हैं**, सब जानते हैं। हमें तो सिर्फ धन्यवाद-धन्यवाद कहना है। **गुरुजी जैसे कहते हैं वैसे चलना है।** बस वो चल सकें ऐसी प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी

('स्वामी की बातें' प्रकरण- ३ की ५३, ५४, ५५, ५६, ५७ समझाते हुए...)

काकाजी ने पहले ऐसी बात करी थी कि मुक्तों ने उत्तर में देह धरा है। एक प्रसंग है कि महाराज छोटे थे और पेड़ पर चढ़ कर पश्चिम की ओर देख रहे थे, तो मित्रों ने वजह पूछी – तब महाराज ने कहा कि पश्चिम में मुक्तों ने देह धरा है। पश्चिम दिशा की ओर 'गुजरात' है। काकाजी ने कहा था कि उस समय में पश्चिम में देह धरे थे, अबकी उत्तर में देह धरे हुए हैं। मैंने पहले भी ये बात करी थी। तो, वे ही होंगे हम सब।

देखो, गुणातीतानंदस्वामिजी ने ये बात करी कि मुमुक्षु ने देह धरे हुए हैं और...मुक्तों को आनंद कराने के लिए महाराज को फिर से आना पड़े, इसलिए मेरी लाईफ को एक्सटेन्ड करके रखी है। गुणातीतानंदस्वामी कहते हैं कि – उनकी आयु तो ५८ वर्ष की थी, ऐसा कुंडली में लिखा हुआ है। ***पर, सोरठ के मुक्तों के ऊपर महाराज का खूब लगाव था, सो उनको अपनी मूर्ति का सुख देने के लिए मुझे यहां रखा हुआ है और मैं वो काम करता रहता हूँ।***

देखो, ये भी साधु का एक स्वधर्म रहता है।

महाराज तो कहते कि – मैंने अपना सर्वस्व गुणातीतानंदस्वामी - सोरठ के भक्तों को कृष्णार्पण कर दिया, बख़्शिश दे दिया...

...स्वामी ने सत्पुरुष को सूर्य की उपमा दी है। सच्चे संत सूर्य समान हैं। सूर्य कभी ये नहीं कहता कि मैं यहां प्रकाश दूंगा, वहां नहीं दूंगा। वह सबको प्रकाश देता है। इस तरह संत की एक फर्ज है कि वह सभी का स्वीकार करे – छोटे हों, बड़े हों, स्त्री हो, पुरुष हो, धनवान हो, गरीब हो।

...कई कहते हैं कि हमें सत्पुरुष मिले हैं। अगर उनसे हमारा संबंध हुआ हो, तो जैसे सूर्य का संबंध हो, तो अंधकार चला जाए। वैसे सत्पुरुष के साथ अगर हमारा संबंध हुआ है, तो अज्ञान चला ही जाए। अज्ञान आटॉमॅटिक चला जायेगा। अज्ञान नहीं जाता – **हमने भले ही दिखावा करा हो; पर देह, धन, धाम, कुटुंब, परिवार में ही हम छुपे-छुपे भी चिपके रहे हों – तो समझना कि सत्पुरुष के साथ संबंध नहीं हुआ।**

सूर्य के बिना आकाश में ओहो कितने ही तारे हों, लेकिन अंधकार जाएगा नहीं। क्योंकि तारों की लाईट बॉरोड लाईट है जबकि सूर्य की स्वतः लाईट है।

...स्वामी अपनी बात करते हैं कि मेरी तो इच्छा है कि ज्ञान देकर सबको ब्रह्मरूप कर दूं, लेकिन तुम लोग तैयार नहीं होते। जैसे ये नरेन्द्र ने कहा कि खोखला कर दो; ऐसा दिल से कहने वाले बहुत कम होते हैं। 'मंदिर की प्रवृत्ति ने पकड़े रखा हुआ है' – कह कर स्वामी ने अपने पर ले लिया कि – मैं तुम्हारे लिए फ्री नहीं रहता। दरअसल तो बात ये कहनी थी कि तुम्हें फुरसत नहीं है। देखो, साधु कैसा निर्मानी है? ऐसा नहीं कहा कि आप लोग कोई मानते नहीं हो, कोई फ्री होकर यहां सत्संग करने आते नहीं हो; पर कहा कि – मैं फ्री नहीं होता।

...'अपरवारे' – मतलब निकम्मा गया, यूज में नहीं आया। असल में स्वामी का कहना ये था कि – आप लोग फ्री नहीं होते, सत्संग करने आते नहीं और मैं सारा ज्ञान, शक्ति, ऐसे ही लेकर बैठा हुआ हूँ, पर... अब मैंने निर्णय करा है कि भक्तों को बुला-बुला करके, संतों को साथ में रख कर बातें करनी हैं...

आप जैसे नियम तो दूसरे अवतारों ने दिए नहीं, तब भी कल्याण करे हुए हैं और आप तो खूब पाबंदी लगा रखते हो – इस प्रश्न पर महाराज ने कहा कि – दूसरों ने जो कल्याण करा है, वह 'कारण शरीर' टाल कर नहीं करा है। बीजरूप संस्कार रह गया, जन्म-मरण का चक्कर टला नहीं। पत्रिका में स्वामिजी की कथावार्ता में दीदी ने लिखा है कि **जीव को जन्म-मरण के चक्कर का रोग लगा हुआ है। उससे छुड़ाना – ये साधु का पहला उद्यम है।**

'गुणातीत' संत कारण शरीर टाल देते हैं। स्वामी का एक प्रसंग है कि एक गांव से कोई आम ले आए थे। पप्पाजी ये बात खूब करते – पहले। वे आम गुणातीतानंदस्वामिजी को दिए। स्वामी सभा में ही बोले कि – 'लाओ' वो भाव से लाया है, इसके आम चूसूं। आम चूस कर गुठली वहां रख दी। भगत को ऐसा हुआ कि स्वामी की प्रसादी की ये गुठली खेत में डालेंगे, आम जो निकलेगा वो प्रसादी का होगा। उसने वो रख लिया – स्वामी ने देख लिया। स्वामी ने कहा – ये उगेगा नहीं, मैंने चूस लिया है; मतलब, कारण शरीर टल गया है उसका। **ये बात सुन कर हमें होता है कि हम इतने सालों से सत्संग में हैं; फिर भी हमारा तो...! पर, आम की भांति हम अपने आपको चूसने देते हैं क्या? योगीजी महाराज ने ये बोला था। पप्पाजी ये बात कई बार दोहराते थे...** बंसरी होना ऑर्डीनरी बात नहीं है। कारण शरीर टाल कर किसी ने कल्याण नहीं करा।

...मूलजी शर्मा खेत में थे, वहाँ महाराज ने पूछा कि क्या करने आए हो और क्या कर रहे हो? ब्रह्मतेज तो सूख गया है। यानि – जगत में से ब्रह्मतेज खतम हो गया है और तुम यहां अभी खेती में लगे हुए हो? दर्शन नहीं हुए थे, आकाशवाणी हुई थी। तब इन्होंने सोचा कि ये खेती-वेती छोड़ो, महाराज के संग ही चले जाते हैं।

...स्वामी ने महाराज को पूछा कि महाराज! आप बताओ हम क्या करें – जो आप चाहते हो। ध्यान करें, आत्मारूप रहें, बीमार मुक्तों की सेवा में लग जाएं या भगवान की बातें करें? महाराज ने कहा बातें करो। **बातों से – शब्द का देह बनता है।**

शब्द का देह कैसे? ये नक्षु पैदा हुआ, तो नाम तो हमने दूसरे तीसरे दिन भले ही रख दिया था। लेकिन, पहले 'नक्षु-नक्षु' करते थे, फिर भी उसको समझ नहीं आती थी और अभी? कहीं भी बैठा होगा और 'नक्षु' शब्द सुनेगा, तो उसको लगता है कि मेरी बात चल रही है। 'नक्षु' शब्द की देह बन गई उसकी। इस तरह ये संतों की बातों की देह बनती है। लेकिन रिसॅप्टीव होकर हमें वो सुननी चाहिए। इतनी बलवान चीज है यह, सो रोज शाम को आकर सत्संग करना चाहिए।

गुणातीतानंदस्वामी ने बताया कि जब से महाराज ने मुझे ये कहा कि बातें करना, मैं कभी थमा नहीं। मैं तो कई बार कह चुका हूं कि १४ प्रकरण की पूरी बातें एक साथ तो मैं तो कभी पढ़ ही नहीं पाया। और ये बातें तो जितनी 'पेन डाउन' हुईं वो हैं। स्वामी ने खुद बोला हुआ है – ब्रह्माण्ड भर जाए इतनी बातें करी हुई हैं। कितनी बातें करी होंगी? **यूं बातें करते मैंने काकाजी को देखे हैं।** ५४-५५ से इनके कॉन्टॅक्ट में मैं हूँ। **डेईली सुबह ६:०० बजे से काकाजी जो शुरू हो जाते, रात को १०.०० -१०.३० तक कथावार्ता चलती रहती।** बीच में एकाध घण्टा सियेस्टा के लिए चले जाएं, इतना ही ब्रॅक। पात्र बदलते रहते; पात्र भी ऐसा नहीं कि समझदार हो - कोई भी हो! काकाजी की बातें कन्टीन्यूअस चलती ही रहती। ५.४५ बजे के करीब वे उठते, रूम से बाहर आएं, रॅज़र शुरू हो और बातें चालू हो जाएं...

...समय नॉन-स्टॉप जा रहा है, रुकता नहीं है। जैसे 'राजधानी' जाती है न? अब 'बुलेट' चला करेगी।

ये सबीज ज्ञान है। एक बात समझ कर रखना – **साकार ब्रह्म की वाणी सबीज है। असर करती है; समय आने पर उगेगी।** किसी को भले ही बुरा लगे; **गुणातीतानंदस्वामी ने स्पष्ट शब्दों में साफ कह दिया –**

'दूसरे चने चटपटे लगेंगे, टेस्टी लगेंगे, लेकिन उगेंगे नहीं और हमारे चने भले टेस्टी नहीं लगेंगे; पर, रास्ते में गिर जाएंगे और... बारिश गिरेगी तो उगेंगे।' बहुत बड़ी चीज है – 'प्रगट की उपासना'। मैं कई बार यह कह चुका हूँ।

अबकी बार की पत्रिका में दीदी ने महाराज के बारे का क्रक्स बता दिया है। खूब ध्यान से पढ़ना। क्या महाराज ने वरदान दिये? क्या महाराज ने काम करा है? मैं कई बार नहीं कहता हूं कि **सूर्य का पिक्चर भले ही बहुत अच्छा हो; लेकिन वो प्रकाश नहीं देगा, वो गर्मी नहीं देगा, ऊर्जा नहीं देगा। जबकि आकाश के प्रगट सूर्य के सामने हम खड़े रहेंगे तो प्रकाश मिलेगा, गर्मी मिलेगी...** जैसे आकाश में सूर्य प्रगट है वैसे, **जैसे अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण मानव स्वरूप में मौजूद थे, इसी तरह हमारे प्रभु मानव स्वरूप में अपने साथ प्रगट होने चाहिएं। धेन एन्ड धेन धी रिडल्स ऑफ लाईफ विल बी सोल्वड।** वर्ना भजन करा करो... कई जन्मों के बाद छुटकारा होगा। ये तो – हम टेढ़े चलें तो मार खा-खाकर भी ज्यादा से ज्यादा दो तीन जन्म में तो पूर्णाहुति!

वैसे तो, ऐसे संत मिलने के बाद आख़िरी जन्म ही होता है, अगर कोई प.पू. साहेब की तरह-जैसे पत्रिका में साहेब के लिए लिखा है कि जब से इन्हें योगीजी महाराज का संबंध हुआ, तब से योगीजी महाराज और उनकी आज्ञा प.पू. साहेब की नज़र में रही। अगर ऐसा कोई साधक हो तो आख़िरी जन्म... वर्ना ज्यादा से ज्यादा दो-तीन जन्म में। ऐसा नहीं कि जन्म-मरण का चक्कर चलता ही रहे। कितना बड़ा फायदा है? विचार तो करो। गुणातीत संत की प्राप्ति यानि?

...प्रगट के उपासकों के लिए विषय क्या? शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध – वो तो सामान्य अर्थ है। **बड़े संत का वचन हम नहीं मान पाएं; वो कहें कुछ और हम करें कुछ वो हमारे लिए 'विषय' हैं। हमारा मन ऐसा होना चाहिए कि हमारी नज़र हमेशा एक भगवान की मूर्ति की ओर ही हो।** संत क्या चाहते हैं?

...स्वामी का कहने का मतलब ये था कि अब मुझे पहचानने में गलती ना कर देना। **जो पाना है वह साधु द्वारा ही पाया जाएगा; अपने साधन से नहीं होगा।** कोई माने कि ऐसा-ऐसा चल कर, ठीक-ठाक बीहेव करके अपनी डेवलपमेंट कर लूंगा, अपनी प्रोग्रेस कर लूंगा- वह गलत सोच है। **प्रोग्रेस साधु की दृष्टि से होने वाली है; उसकी मर्जी में रहेंगे – प्रोग्रेस होता रहेगा...**

प.भ. अजय मल्कानीजी

...आज गुरुजी का बर्थ-डे है; नॉर्मल है कि गुरुजी के बारे में कोई बात करें। पर, इट इझ नॉट नॅसेसरी; क्योंकि बहुत पहले मैंने एक पढ़ा था कि सच्चे संत को हम समझ तो पाते नहीं हैं और जो सच में समझ जाएं, वो आटोमेटिकली चुप हो जाता है। तो, बेटर नॉट टु से एनी थिंग। गुरुजी ने मुझे बहुत पहले एक दफा बात करी थी। मैंने कोई क्वेश्चन पूछा था, तो फिर उन्होंने मुझे कहा था कि ट्रुथ इझ की वी डोन्ट वॉन्ट टु बी रीड ऑफ धीस वर्ल्ड। वो बात मेरे को मेरे माईन्ड में बिल्कुल फिट-सी बैठ गई कि हम लोग यह बोलते हैं, यहां आते हैं, बड़ी-बड़ी बातें भी करते हैं - सुनते हैं - समझते भी हैं, पर जैसे बात करते हैं कि निडरता है - ख़ुशी है - आनंद है - वह कहने के लिए नहीं, पर सच में वो है क्या? यूं हमें सोचना चाहिए कि सच में है कि नहीं है। जो रीयल है वही बात करो; गुरुजी तो जानते ही हैं।

...ये जो बात करी न बंसरी की – मेरे को उस टाइम भी ख्याल आया कि उन्होंने कितनी अच्छी बात करी कि बंसरी अपने आप तो खोखली हो जाती नहीं है। उसको भी कोई खोखला ही करता है। तो हमारा क्या एफर्ट है उसमें? कोई एफर्ट है ही नहीं; माना, गुरुजी को ही करना है। पर खोखला होते हुए जो पेईन होता है, वो बर्दाश्त करने के लिए; हम रेडी हैं ही नहीं। सो, जो गुरुजी चाहते हैं वो हम लोगों का स्तर होता ही नहीं है। वो दुःखी होकर बैठ जाते हैं; फिर कोई और तरीका सोचते हैं। सो, फॅक्ट इझ धॅट वी आर नॉट रेडी, वी डू नॉट वॉन्ट टू लीव ऑफ अवर एन्टरटेईन्मेन्ट्स... सच में हम छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। सो हमारी हालत और बिगड़ती है – फिर एक जन्म की जगह तीन जन्म, चार जन्म, छः जन्म... जो भी है।

अब उससे भी थोड़ी आगे मैं जो बात कर रहा हूँ। यह मैं खुद भी समझ रहा हूँ, खुद भी लाभ ले रहा हूँ – अपना। गुरुजी ने बोला कि सच्चे संत से अपना रिलेशनशिप बना लो। गुरुजी ने ही मुझे एक दफा यह समझाया था। हर एक का अलग-अलग रिलेशनशिप है। इतने लोग यहां है; मेरे तो दो चार फ्रेंड्स हैं; उनके साथ भी अलग-अलग बीहेव करना पड़ता है। तो, गुरुजी को कितनों के साथ कितना अलग-अलग बीहेव करना पड़ता होगा? हर एक का अपना संबंध – जो उनके साथ है, वो अलग-अलग है। पर जो भी है, जैसा भी है – वो सिन्सियर रखना चाहिए। वो भी हम से होता नहीं। वे हमें कोई बात पूछें तो हम एईटी परसेन्ट बता देंगे, ट्वेन्टी परसेन्ट नहीं बताएंगे। **हमारा माईन्ड ही ऐसा है। हम पूरा छोड़ना ही नहीं चाहते।** वी डोन्ट वॉन्ट टू बीकम टोटली हिज़।

तो उसमें हम ऐसा करें – हर एक में धॅर इझ वन थिंग गुड इन अस। उसको पकड़े रखें। जैसे गुरुजी खुद बोलते हैं – मेरे से 'सेवा' वगैरह नहीं होती थी। पर मैंने एक बात पकड़ कर रखी कि 'भजन' जो मैं करता था और वह करना मैंने नहीं छोड़ा। यूं उन्होंने भजन करना नहीं छोड़ा, तो हम सेवा करनी ना छोड़े। तीसरा

कोई – जो रिलेशन है उसे ना छोड़े। चौथा – ‘आज्ञा’ ऐसी पालन करे। ‘आज्ञा’ का भी पालन करना है, पर उस रिलेशनशिप से। जो अपना अंग है – उसको हम स्ट्रांग करके उस पर ध्यान दें; बाकी चीजों पर माईन्ड न फोकस करें। पॉइंट यही है कि **गुरुजी से रिलेशनशिप सिन्सियर और सीधा बन जाए, जिससे कि हम खोखले हो जाएं और उनका म्यूझिक बनें।**

अगर यह एक समझ रखेंगे, तो प्रोसेस इझीयर हो जाता है। सो, ट्रिक ये है कि हमारा कौन-सा अंग है – यह ढूंढ करके, उसी को स्ट्रोंग करके हम एम्पटी होंगे, तो फिर गुरुजी के साथ रिलेशनशिप बन पाएगा। वर्ना तो, सारी बातें ही बातें हैं। मैं ये ऑनेस्टली बोल रहा हूँ, किसी को पसंद नहीं भी आएंगी। हम रेडी नहीं हैं, हमारे एन्जॉयमेन्ट्स छोड़ने के लिए। जितना हम स्ट्रगल कर रहे हैं, उतना हमारे लिए दुःख बढ़ता जा रहा है। फाइनली तो छोड़ना ही पड़ेगा। बीकॉझ, उनके साथ रिलेशनशिप हो चुका है। उसके बाद कोई बोले कि – मैं दुःखी ही रहना चाहता हूँ – धॅट इज़ नॉट पॉसीबल। ये उनकी ग्रेटनेस है – इतना हम मानते हैं। चलो समझते नहीं है, पर मानते तो हैं! जितना जल्दी हम रेडी हो जाएं, उतना जल्दी वो भी खुश और हम भी खुश! उसके लिए हमारे एफर्ट भी क्या हैं? कोई एफर्ट का फायदा तो है नहीं। वो भी गुरुजी ने मुझे बहुत पहले बताया था कि अजय, फाइनली तो ‘ग्रेस’ से ही होने वाला है। और... थोड़े दिन पहले उन्होंने ये भी बात करी थी कि आशीर्वाद मांगने से मिलने वाला है नहीं। आशीर्वाद – उसके बाद से मैंने मांगना ही छोड़ दिया है कि आज हमारा ये मंगलकारी दिन है – आज आशीर्वाद दे दो। नो पॉइंट, अगर सच में ही वी आर डिजर्विंग, ही विल मेक श्यॉर। अनुभव वगैरह की जो हम बात करते हैं – वो बात करा न करें। मैंने स्वामी की बातों में पढ़ा था कि हर एक का अलग-अलग अनुभव है और अगर सच्चा अनुभव है, तो ईट ईझ फॉर यू टू प्रोग्रेस ओन्ली, नॉट फॉर सभा। आपको अगर कोई अनुभव हुआ है, तो उससे मेरे को क्या फायदा होने वाला है? ईट ईझ बिट्वीन यू एन्ड गुरुजी। मेरा कहने का मतलब ये है कि – जो भी अपना रिलेशनशिप है, उसको स्ट्रोंग करने के लिए गॉड गिवन स्ट्रेन्थ पर फोकस करके हम गुरुजी से ऑनेस्टली रिलेशनशिप बनाएं। फिर तो कोई चान्स है, वर्ना कोई चान्स है ही नहीं। भले हम यहां आते रहें... कितनी ही डिस्कोंसिस सुनते जाएं। इसलिए मैं कई दफा आता ही नहीं हूँ। पता है खुद ही गलत हूँ; कोई फायदा नहीं, बट वी हॅव टू कीप ट्राईंग। तो आज के मंगलकारी दिन पर यही चाहना है कि आने का बल मिलता रहे...

१३ मार्च ’०८ प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन

प.भ. प्रकाशचन्द शर्माजी

प्रासंगिक उद्बोधन में मैं अपने मंदिर के साथ के सम्पर्क की ही बात करूंगा।

...३ नवम्बर १९९९ को मैंने अशोकविहार झोन जॉईन करा था। यहां इस मंदिर के वॉटर कनेक्शन की एक फाइल चल रही थी। इस सिलसिले में इन्सपेक्टर बोला कि साहब आप देखने चलो। मैंने कहा चलो भाई। हम यहां पैदल आए और... यहीं पर मंदिर में गुरुजी मिले... गुरुजी ने हमको ‘कथामंगल’ दिया और कहा कि मंदिर आते रहना। हमने भी कहा – ‘हाँजी आएंगे’... चार साल तक तो यहाँ किसी को पता ही नहीं लगा

होगा कि मैं कौन हूँ और ना ही मुझे किसी के बारे कि ये भाई कौन है – वो भाई कौन है? आई नेवर आस्क्ड सिंगल पर्सन्स नेइम, कभी नहीं पूछा – ख़्वाईश ही नहीं आई!

...गुरुजी गढ्डा प्रथम प्रकरण ११ के तहत मुझे आप **'एकांतिक भक्त'** बनाना... मुझे किसी चीज की ख़्वाईश नहीं है; इन्हीं कपड़ों में आप मुझे वो 'साधु' – वो 'सेवक' बनाना। पहले के चार साल का तो अज्ञातवास हो गया। उसमें तो ऐसी कोई चीज समझ में ही नहीं आई थी। लेकिन **इन पिछले चार साल में आपने जो हमें दिया है, वह चार सौ साल में भी नहीं मिलेगा।** हमने कभी नहीं सोचा था कि भगवान मिलेंगे... **गुरुजी ने हमारी चेतना को सही करा है, पल-पल बहुत संजोया है।** ये जो है गाया जाता है – 'पल-पल मेरे चैतन्य का जतन किया तुमने' – फॉर मी इट इज ए रियल फॅक्ट।

...गुरुजी ने मुझे हर सॅटर डे की रात को मंदिर में रुकने कहा है। मैं कह नहीं सकता कि किस तरीके का प्रोसेस चल रहा है। वो आप ही जानते हो। उस दिन मेरे को पता लगा कि पीछे बेड है, ये है वो है। यहां हर एक कास्ट के आदमी हैं, हर एक कॅटेगरी के आदमी हैं, हर एक का थीम अलग-अलग है, हर एक की लाईफ स्टाईल अलग-अलग है। पर, जिस तरीके से संतों की तरह सब यहां पर सोते हैं, वो चीज देखने लायक है। मेरे मन में भी कोई विचार नहीं आया था। पर, वो सोना नहीं है; वो तप है... हम इतनी दूर से आते हैं; घर से ही समाधि लग जाती है और यहां आपके पास आ जाते हैं। अब तो यही है कि गढ्डा प्रथम प्रकरण ११ के तहत एकांतिक भाव हमारे में ला देना और वासना केवल मेरे को इस मूर्ति की रहे और कोई वासना ना रहे क्योंकि ये मूर्ति ही जीवन का उद्धार है...

प.भ. राकेशभाई शाह

कुछ साल पहले जब अक्षरज्योति के कन्सट्रक्शन का काम चल रहा था, तो 'सेवी' मॅगेझीन से कुछ जर्नलिस्ट यहां पर आये थे और प.पू. दीदी का उन्होंने इन्टरव्यू लिया था। पूरे हिन्दु रिलीजियन और जो सॅक्ट्स है, उसका वे कवरेज कर रहे थे। बाद में 'सेवी' का जो इश्यु आया, उसमें दीदी का फोटोग्राफ बिल्कुल कवर पेज पर था और अन्दर भी काफी अच्छी तरह से कवरेज वगैरह दिया था।

उस समय गुरुजी ने हमें हुए **संबंध की पोटेन्शियालिटी** की एक बात समझाई थी। पर, हम ही यह समझ नहीं पाते हैं। महाराज ने मुक्तानंदस्वामी को कहा था कि तुम्हारी क्या ताकत है वह आप नहीं जानते। उसी बात का रॅफरंस देते हुए गुरुजी ने बताया था कि ये जो **प.पू. काकाजी का संबंध मिला है, वो ऐसा है कि उसकी वजह से हम जहाँ भी जाते हैं, हम हट के नजर आते हैं।** इस पर्टिकुलर ईश्यु में हिन्दू धर्म और कई स्त्री-संतों का कवरेज उन्होंने दिया है; लेकिन दीदी में उन्हें जरूर कुछ ऐसा लगा होगा, जो कि सबसे ज्यादा और प्राइम कवरेज दीदी को दिया!

ऐसा ही एक दूसरा अनुभव था, अपने यहां राजुभाई शाह हैं; जो किचन में सेवा देते हैं। कुछ साल पहले उनके यू.के. के वीज़ा की प्रॉबल्म आ रही थी। पहली बार जब वीज़ा के लिए एप्लाई किया, तो रिफ्यूज़ हो गया। वे तो बहुत ही उदास से यहां मंदिर में आए और गुरुजी से बात करी। गुरुजी ने उनकी पूरी बात सुनकर उन्हें कहा कि आप दोबारा एप्लीकेशन दो और एक रिक्वेस्ट लेटर लिखकर आप साथ ले जाओ। गुरुजी ने तब मुझे

भी बुलाया था और कहा कि आप ये लेटर ड्राफ्ट कीजिए। मैंने राजुभाई से पूरी बात समझ कर लेटर का एक ड्राफ्ट तैयार किया। फिर, गुरुजी को दिखाया तो गुरुजी ने उसमें २-३ जगह कुछ शब्दों का हेरफेर किया। अंग्रेजी के हिसाब से मुझे ऐसा लगा कि गुरुजी जो चेइन्ज कर रहे हैं, शायद वो ठीक नहीं है। गुरुजी मेरी बात को भांप गए, सो उसी वक्त कहा कि ये शब्द जो मैं यहां लगा रहा हूँ, वे काकाजी के प्रसादी के शब्द हैं। तो **काकाजी के प्रसादी के जो शब्द हैं, वो खूब पावरफुल होते हैं। मैं उनकी ताकत को जानता हूँ**, इसलिए ये शब्द मैंने यहां रखे हैं। उस टाईम मुझे बात पूरी तरह से डाइजेस्ट नहीं हुई, लेकिन बाद में जो अनुभव हुआ वो आंखें खोलने वाला था। दूसरे दिन मैं भी राजुभाई के साथ यू.के. एम्बेसी में गया था। राजुभाई को ऐसा था कि कुछ बात वात करनी पड़े, सो राकेशभाई को साथ रखूंगा। लेकिन एम्बेसी वालों ने मना कर दिया कि आपको चाहिए तो आप हमारा आदमी ले लीजिए, इनको आप नहीं ले जा सकते। इसलिए मैं तो जाकर साइड में बैठ गया। फिर, बाद में राजुभाई की उनसे जो भी बातचीत हुई हो–लेकिन उन्हें वीज़ा मिल गया और...खुश होते हुए वे बाहर आए। उन्होंने बताया कि पहले तो वो जो ऑफिसर था, बात सुनने को ही तैयार नहीं था और वीज़ा पहले रिजेक्ट हुआ था–इसलिए वो रिजेक्ट ही कर रहा था। जब मैंने ये कहा कि इतना पैसा लगा कर दोबारा एप्लाई किया और आप मेरी चिट्ठी पढ़ने तक को तैयार नहीं हो? यह बात इन्टरप्रीटर ने कनवे करी कि ही हेझ ब्रॉट ए लेटर एण्ड ही वॉन्ट्स यू टु रीड इट। तब, उसने जो चिट्ठी पढ़ी तो वह पढ़ कर उसका मन बिल्कुल बदल गया और कहा कि ठीक है मैं तुम्हें वीज़ा देता हूँ, पर तुम वापिस आकर मेरे से मिलना कि तुम वापिस आ गए हो। राजुभाई का खुद का फिर कहना था, उस चिट्ठी में वो प्रसादी के जो शब्द थे उसकी वजह से पूरी कहानी बदल गयी। तो बात वही आती है कि प्रगट की फिनोमीना में जो पोटेन्शियालिटी है, उसको हम पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं और इसीलिए इस संबंध की महिमा को नहीं जानते हैं...

तो आज एक ही प्रार्थना है कि ऐसा दिव्य संबंध मिला है, ऐसा दिव्य समाज मिला है, उसकी सेवा कर लें और... सबसे बड़ी सेवा तो यही है कि उसमें दिव्यभाव रखकर - निर्दोषबुद्धि रख पाएं – ऐसा गुरुजी हमें बल-बुद्धि और प्रेरणा दें।

प.भ. प्रभाकरजी

आज हम गुरुजी का इकहत्तरवाँ जन्मदिन मना रहे हैं। जैसा कि सब जानते हैं – कौशिकभाई एक्सीडेन्ट के बाद आज भी हॉस्पिटल में बेड पर हैं। गुरुजी के जन्मदिन पर वो यहाँ पर उपस्थित ना हों, ये हम सबको एकदम अजीब-सा लगता है। उनका गुरुजी के प्रति जो भाव है, सबको मालूम है। वो तो आज आ नहीं सकते थे। पर, मैं देख रहा था कि सुबह-सुबह गुरुजी ने कहा कि आज मुझे कौशिक को देखने हॉस्पिटल जाना है। यूं **एक भक्त को जो चाहना होती है, भगवान को भी उतनी चाहना होती है।** उनका भी दिल उसके बिना रह नहीं सकता। हम कहते हैं न कि **हमारा दिल घर में नहीं लगता, वैसे भक्त के बिना गुरुजी का भी मन नहीं लगता।** बात हमें साधारण लगेगी, लेकिन गहराई से सोचें तो गुरुजी ने आज इस चरित्र से दिखाया कि तुम अगर मेरे हो, तो मैं भी तुम्हारा ही हूँ– तुम्हें मैं उतना ही चाहता हूँ, जितना तुम मुझे चाहते हो या शायद उससे ज्यादा मैं तुम्हें चाहता हूँ।

अभी थोड़े दिन पहले मुझे किसी ने एक एस.एम.एस. भेजा था कि – इफ यू वॉन्ट टु बी हॅपी, फरगेट टु थिंग्स; नंबर वन – धी थिंग्स यू हॅव डन गुड फॉर अधर्स एन्ड नंबर टु – धी थिंग्स अधर्स हॅव डन बॅड फॉर यू। मुझे एकदम वो बात याद आई – जिसमें **योगीजी महाराज** की मूर्ति के नीचे लिखा हुआ था कि **'भगवान सौनुं भलुं करो।'** इट्स ओ.के., आपने किसी का भला करा और आप भूल गए; किसी ने आप के साथ बुरा किया और आप भूल जाएं। संत उसके आगे की अपेक्षा हमसे रखते हैं कि जो तुम्हारा बुरा करे, उसका भी भला करने का तुम अपने मन में रखो। यह सन्टेन्स सुन के मैं सोचता रहा क्या हम सच में ऐसा कर पाते हैं? किसी ने हमारा थोड़ा कुछ भी ना माना हो या कुछ हमें ना समझा हो, तो हम तो उससे कतरा कर निकल जाना चाहते हैं। संत हमसे कुछ और अपेक्षा रखते हैं। संत जो हमसे बात करते हैं कि – डु नॉट कन्सीडर धी फॅक्ट्स एज़ धे आर...। वो हमसे अपेक्षा रखते हैं कि जो कुछ भी हो रहा है, वह चलाने वाले जब हमारे प्रगट प्रभु ही हैं, तो नॅचरली सभी मुक्त कठपुतली की भांति अपने-अपने समय पर आकर अपना-अपना काम करते हैं; कोई कोने में होगा, कोई झुका हुआ होगा, कोई सीना ताने खड़ा होगा। उन संजोगों में हम भी उन्हीं कठपुतलियों की तरह भगवान हमें जैसा - जैसा नचाएं वैसे आपस में एकता और सुहृद्‌भाव से निकल पाएँ – यही गुरुजी के चरणों में प्रार्थना। सहजानंद स्वामी महाराज की जय।

प.भ. पुरी साहेब

आज १३ मार्च का कितना बड़ा मंगलकारी दिन है कि हमारे प.पू. गुरुजी का जन्मदिन और साथ में हमारे सत्संग की वडील **पूज्य शीला आंटी** का, **निष्ठा दीदी** का, **आस्था** का, **शाश्वत्** का जन्मदिन और इस दिन के ऊपर आप सबको बहुत-बहुत बधाई व जय स्वामिनारायण।

आज **महाराज को बहुत-बहुत धन्यवाद दें कि उन्होंने गुरुजी को हमारी रक्षा के लिए दिल्ली में नियुक्त किया।**

१३ अंक के बारे में कई भ्रांतियां हैं। कई जगह तो ऐसा है कि हाईराईझ बिल्डिंग्स में १३वां फ्लोर होता ही नहीं। वो नंबर ही एलॉट नहीं करते। लेकिन हमारे प्रभु कितने दयालु कि उन्होंने गुरुजी को १३ तारीख को ही भेजा। अभी दो दिन से जो शाम को सभा होती है; उसमें उस टेप को सुन रहे थे, जो कि १९८० में कुरुक्षेत्र में काकाजी के सान्निध्य में एक शिविर हुआ था। गुरुजी की आवाज सुनने पर ऐसी लगी जैसे कानों में घंटियाँ बजती हैं। खन-खन करती हुई कितनी मीठी आवाज?

...मुझे वो २२ अगस्त १९९३ बड़ी अच्छे से याद है जब सुबह ९.१५ बजे के करीब गुरुजी का फोन आया कि आप मंदिर कब आओगे? मैंने १९९० में यहाँ शिफ्ट किया था, तो यहाँ मार्केट में जब शॉपिंग वगैरह करने जाते थे, तब मंदिर की कन्सट्रक्शन चल रही थी और ए-१०३ से गुरुजी शायद मंदिर के कन्स्ट्रक्शन को देखने के लिए आते-जाते थे। मुझे गुरुजी की वो मूर्ति मन में बैठ गई थी। लेकिन ऐसा नहीं था कि पता किया जाए कि हमारे इलाके में ये गुजरातियों के जो साधु हैं, वे अपने में क्या करते हैं? कैसा भजन करते हैं? लोगों को तरह-तरह की भ्रांतियां थीं। उन भ्रांतियों का मन के ऊपर तो असर नहीं था, लेकिन ये भी भावना नहीं थी कि पता किया जाए कि क्या है?

पर, वो २२ अगस्त का दिन – प्रसंग तो आप सभी लोग जानते हैं कि कहां से कैसे शुरू हुआ था ? गुरुजी का फोन आया कि आप मंदिर कब आओगे ? मैं बड़ी कॅज़्युअल-सी ड्रेस में मंदिर में आया। गुरुजी ने कहा – 'साहेब' के लिए कुर्सी लगाओ। मैंने कहा नहीं गुरुजी मैं नीचे बैठता हूं। नीचे बैठे, गुरुजी से बात करी। कोई प्रवचन वाली बात नहीं, कोई धार्मिक बात नहीं। मैंने कहा अच्छा मुझे आज्ञा दें। तो गुरुजी कहते हैं फिर कब आओगे ? तो मैंने कहा – जैसे सहुलियत होगी। नहीं-नहीं, आपको कल फिर आना है। मेरे मन में एक जगह ये आया कि ये बात क्या है ? ये क्या सिस्टम है ? कोई बात भी नहीं हुई है, कोई प्रवचन भी नहीं हुआ; जैसे हम लोग मंदिरों में जाते हैं तो मूर्ति के सामने खड़े होकर कहते हैं कि मेरा ये हो जाए, मेरा वो हो जाए, मेरा ये बिगड़ा हुआ काम ठीक हो जाए – ऐसा भी मैंने कुछ नहीं मांगा और... इन्होंने भी कुछ दिया नहीं। फिर भी कहते हैं कि आपको कल फिर आना है। अब मैं कल क्या करने के लिए आऊंगा ?

लेकिन अगला दिन निकला और सुबह से मन में एक बवंडर चलना शुरू हुआ कि कब शाम हो और मैं मंदिर जाऊं। गुरुजी ने तो इतना ही कहा था कि आपको कल आना है और जैसे कहते हैं कि **'टेम्पल फीवर'** – उसका शायद २२ अगस्त को इन्जेक्शन लगा। वो फीवर को अब पन्द्रह साल होने को हैं। तो गुरुजी, आपने इन पन्द्रह साल में इतनी कृपा की है कि जब हम मंदिर के गेट के बाहर होते हैं तो संसार के बहुत बवंडर घेरते हैं। ये नहीं हुआ, ये बिगड़ गया, ये कैसे होगा, ये क्यूं हुआ ? कई सवाल दिमाग में गूंजते हैं। लेकिन मंदिर के गेट में एन्टर करते ही वो चीजें चली जाती हैं, दिमाग से शेडऑफ हो जाती हैं। ये शायद हम सभी का एक यूनिक एक्सपीरियन्स है। तो, इतना कुछ होने के बाद हम महाराज को, काकाजी को कैसे धन्यवाद ना दें ? कैसे उनको याद ना करें ? **हम बड़े खुले दिल से ये सोचें कि इन संतों ने हम पर कितना बड़ा उपकार किया है !**

अभी ३ फरवरी को आशीष की शादी थी। मैं हूँ या ओ.पी. जी हों, जिनके घर में शादी हो – उन बच्चों के पॅरन्ट्स को एक बुखार-सा चढ़ा रहता है कि सब काम ठीक-ठाक से हो जाए। लेकिन हम दोनों परिवार के लोग उस शादी में ऐसे घूम रहे थे जैसे कि और किसी के यहाँ शादी हो और हम... बराती हों। मंदिर के कम्प्लैक्स में कोई डिस्टिंक्शन नाम की कोई चीज नहीं थी। कहते हैं न कि शादी एक लॉटरी जैसा काम है, निकल आए-निकल आए ना निकले तो ना निकले; लेकिन दोनों बच्चों के एक्सप्रेशन्स से, उनके फेईस से, उनके बातचीत करने के तरीके से महसूस किया कि – वो इतने निश्चिंत थे कि ये जो गुरुजी ने और दीदी ने संबंध बनाया है इसमें कोई शंका का विषय बचता नहीं है।

बाकी... हमारे लिए मांगने को तो बहुत कुछ है। बस स्टॉप पर खड़े होते हैं तो भी प्रार्थना करते हैं कि हे महाराज ! बस जल्दी से आ जाये। मांगते तो रोज हैं और आगे भी मांगते रहेंगे। लेकिन गुरुजी से अब हम कुछ ऐसा मांगे कि हमारा जो आगे का जीवन है, उसमें हमारी साधना में, हमारे विचारों में कोई झंझट ना आए।

खाना-पीना, रहना, पहनना ये तो हम लोगों का इन्श्योर्ड है और... गुरुजी कई बार हमें बड़े हक़ से वो देते रहते हैं। मैं एक छोटा-सा एक्सपीरियन्स बताता हूँ। इन बच्चों की शादी के बाद मिसिस ऑफिस गए, तो मुझे कहने लगे कि आज मैं बहुत थकी हुई हूँ; आप होटल से खाना ले आओ। बच्चे चले गए थे अपनी जॉब पर। तो हम हसबन्ड-वाईफ ही थे, और... हम दोनों को दो-दो चपाती ही खानी थी। हम मंदिर आए, तो

गुरुजी ने कहा कि खाना खाकर जाना। गुरुजी हम लोगों के दिल की बात को तो पकड़ते हैं। घर में आएंगे तो जिस कमरे में सारा कचरा भरा होगा, उसी को खुलवा कर कहेंगे कि ये कमरा खोलो। यूं होटल से खाना आया था, सो गुरुजी ने कहा कि खाना खाकर जाना। तब मेरे मुंह से सहजभाव से निकल आया कि खाना तो गुरुजी होटल से मंगवाया है। गुरुजी दिल से इतने नाराज़ हुए कि उनके फेस के एक्प्रेशन मेरे दिमाग में गड़े हुए हैं। 'अरे, होटल से खाना मंगवाया! आप लोगों ने मेरा कचरा कर दिया' – ये शब्द गुरुजी ने यूज़ किए। हमारे ऊपर उन्होंने कितना हक़ रखा है और हमें ये जताया कि अगर मैं तुम्हें इतना मानता हूँ, तो तुमने (मंदिर पर) इतना हक़ क्यों नहीं माना?

तो, आज के दिन सबसे पहले काकाजी को बहुत-बहुत धन्यवाद और साथ में गुरुजी से ऐसी प्रार्थना कि गुरुजी हम आपकी इच्छा के अनुसार चल पाएं और हमारी सोच के बवंडर का अंत हो ऐसी प्रार्थना।

प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब

जिनकी मूर्ति हमारे मन मंदिर में है, जिनके डाईरेक्ट-इनडाईरेक्ट संदेश से हम अपना जीवन व्यतीत करते हैं और एक आस्था और श्रद्धा के साथ कि वो हमारे परिवार का, मानव जाति का कल्याण करेंगे– ऐसे प.पू. गुरुजी का जन्मदिन मनाना एक सौभाग्य की बात है। हम सब के लिए और जो यहाँ नहीं भी हैं उनके लिए भी आज का दिन, ना सिर्फ गुरुजी के लिए – बल्कि हमारे सबके लिए है। जीवन की एक नई और सही दिशा देने में अवश्य यह समर्थ होंगे, ऐसी मेरी मान्यता है।

गुरुजी के बारे में कुछ यहाँ पर बताया गया है, इनका श्री गुरुजी के साथ कई सालों का रिश्ता है-संबंध है-दिव्य संबंध है। मेरा श्री गुरुजी के साथ इतना तो संबंध नहीं जो आपका है, लेकिन जितना भी है उसमें मैंने बहुत कुछ पाया है। मैं यह तो अवश्य कहूँगा कि **गुरुजी अपने लिए नहीं जी रहे, गुरुजी आपके लिए जी रहे हैं** और इसलिए जो भी हरिभक्त हैं-जो भी सत्संगी हैं उनके जीवन का जो सुख और दुःख है, वो सुख-दुःख का साथी-सुख दुःख को अपना सुख दुःख मान कर श्री गुरुजी हमेशा चलते हैं और **इसलिए हमें लगता है कि गुरुजी मेरे हैं।**

मुझे अभी-अभी एक अनुभव हुआ कि गुरुजी अपने हरिभक्तों का कितना ख्याल करते हैं? इनके व्यवहार का – कहाँ पर कौन-कैसी डिफिक्लटीज़ में है, इसका वे ध्यान रखते हैं। अभी थोड़े दिन पहले की बात है – गुरुजी ने मुझे फोन किया; जो काम के लिए फोन किया मुझे बड़ा आश्चर्य भी हुआ और बड़ा आनंद भी हुआ। जिस प्रकार का काम था इसके लिए मुझे आश्चर्य हुआ और आनंद हुआ कि चलो! कम से कम गुरुजी ने ऐसा तो माना कि ये काम इनके द्वारा हो सकता है। यूं, अपने सत्संगी का जीवन कहीं दुष्कर ना बने, डिफिकल्ट ना बने, इनके जीवन में सदा अमन-चैन बना रहे; इसके लिए गुरुजी जिसको भी कहना पड़े, उसे कह कर जो स्थिति पैदा हुई है, उसे दूर करने की जो कोशिश करते हैं। मुझे लगता है कि गुरुजी का ये स्वभाव है। आख़िर गुरु हैं हमारे और गुरु के प्रति अपेक्षा तो कभी करनी भी नहीं रहती। हमारे मन की भावना समझ कर उसे कैसे साकार किया जाए इसी दिशा में कार्य करें, ऐसे गुरुजी हमारे सम्मुख आज उपस्थित हैं।

हम मंदिर में जाते हैं, देव-देवियों की मूर्तियां हैं, प्रतिष्ठित की गई हैं। हमें भी बहुत श्रद्धा है कि मंदिर में

जाने से अवश्य हमारा कल्याण होगा। लेकिन **जब गुरुजी के पास आते हैं तो हमें लगता है कि स्वयं हम ऐसे परमतत्त्व के पास पहुंचे हैं कि जहां हमारा कल्याण होगा ही होगा।** शायद मंदिर से ऐसी आस्था नहीं बनेगी, जो हम गुरुजी के सम्मुख होकर इनके दर्शन से हमें प्राप्ति होती है। यह कहीं और से नहीं होती और हर एक के जीवन में गुरु का होना आवश्यक है। **बिना गुरु के आदमी की कोई कीमत नहीं है।** हमारे जो शास्त्र हैं, वो भी ऐसा कहते हैं। **हमारे जो भगवान हो गए हैं, वो भी गुरु को स्वीकार करके उन्होंने अपनी समर्थता बनाई है।** यूं, जीवन में गुरु का होना बहुत ही जरूरी है और इसीलिए जब हम सब सत्संगी, सब हरिभक्त यहां पर गुरुजी के पास आते हैं, तो मन में एक शाता, एक ऐसी मनःस्थिति पैदा हो जाती है कि मुझे सब कुछ मिल गया। **गुरुजी के पास आकर सब कुछ मिल गया है ऐसी एक भावना होती है। सब उनके ऊपर छोड़ देते हैं और गुरुजी भी जैसे कहा गया बड़े सिम्पल हैं। कोई बाह्य आडंबर नहीं है –** हम जो और गुरुओं में देखते हैं। कभी-कभी तो निचले तबके के लोग हैं, वो तो उनके पास जाने की हिम्मत भी नहीं करते और जाते हैं तो क्या पाते हैं वो तो वो खुद जाने। लेकिन **यहां पर मैंने देखा है कि कोई हरिभक्तों के बीच कोई भेदभाव नहीं। सबको समान प्यार मिलेगा, मोहब्बत मिलेगी।** सबको गुरुजी के व्यवहार से, उनकी वाणी से एक अच्छा संदेश मिलेगा– जो उसके जीवन का उद्धार करेगा। यह बहुत कम लोगों में होता है और **ऐसे बड़े सिम्पल हमारे गुरुजी हैं।** लेकिन हर एक का यह अनुभव है कि **जो बहुत महान आदमी हो गये और मानवजाति ने इनका ऐसा स्वीकार किया, वे ऐसे ही सिम्पल होते हैं।** लेकिन उनके व्यवहार और उनके संदेश में बड़ी ऊंचाई रहती है। वो ऊंचाई तक पहुंचने में भी हमें शक्ति प्रदान करते हैं प.पू. श्री गुरुजी–जिसको हमने गुरु माना। **गुरुजी कभी ये नहीं चाहेंगे कि हमारा हरिभक्त मेरे से कम ऊंचाई पर हो। ऐसा जो मानें वो गुरु है भी नहीं।**

हमारा सद्‌भाग्य है कि हमारे बीच जो गुरुजी हैं, वे हमें अपने समकक्ष बनाकर उनकी कक्षा में पहुंचाने का बहुत बड़ा प्रयास कर रहे हैं। और वो भी–ऐसा नहीं कि बहुत बड़ा चमत्कार करके। आज तो चमत्कार को दुनिया मानती है; चमत्कार करने वाले को गुरु मान लेते हैं। भले चमत्कार दिखावा हो, लेकिन चमत्कार को मानकर चलती है। मैंने आज तक तो नहीं बताया, पर ऐसे इन्सीडन्ट का मैं साक्षी हूँ। गुरुजी के साथ रह कर मैंने पाया है। वैसे तो हर एक जो घटना होती है, उसको बड़ी बुद्धि से मैं नापता हूँ। फिर भी, जहां भक्तिभाव है, जहां धर्मभाव है, वहां पर बुद्धि ज्यादा चलानी नहीं चाहिए। ऐसा मानकर चलना चाहिए कि जो भी हो रहा है वो अच्छा है।

बड़े भाग्य के सहारे एक बार मैं गुरुजी के साथ में मनाली गया था। मुझे मन में था कि चलो, मनाली में गुरुजी का सत्संग होगा, जीवन में नज़दीक रहकर बहुत पाना नसीब में होगा। इसीलिए मैं गुरुजी के साथ मनाली गया था। तब गर्मी के दिन थे। शायद जून का महीना था। वहां पर हमारी **गार्गी बहन** ने इच्छा जाहिर करी कि इस मौसम में अगर बर्फ हो तो कैसा ? सब बोले कि बर्फ तो होने वाला नहीं। इस महीने में यहां पर बर्फ तो होता ही नहीं। आपको देखना है; तो नवंबर-अक्तुबर के बाद आओ – आपको देखने को मिलेगा।

लेकिन जैसे ही उन्होंने कहा – गुरुजी हमको ले गये पहाड़ी पर और बड़े आश्चर्य के साथ हमने देखा कि चारों ओर खूब बर्फ गिरी। इतनी बर्फ गिरी जैसे हम विन्टर में वहां पर पहुंचे हों। मैं बहुत दिन तक सोचता रहा कि सब लोग कहते थे कि ऐसा तो हो ही नहीं सकता – कैसे हो गया? ये कैसा चमत्कार हुआ? मैं मानता नहीं था; लेकिन धीरे-धीरे बहुत चिंतन करके देखा तो पाया कि शायद गुरुजी का ऐसा चमत्कार होगा। मनाली में गुरुजी का सत्संग हुआ उसमें जो मैंने पाया इससे मुझे लगा कि अपनी बेटी – गार्गी की इच्छा है, इसीलिए मैंने कहा कि चमत्कार में न मानते हुए गुरुजी ऐसे चमत्कार नहीं, लेकिन जीवन में चमत्कार अवश्य करते हैं। **ऐसे हमारे पास एक बड़ी प्रतिभा है और मुझे बहुत खुशी है कि 'गुजराती साधु' – जो हमारे में से – हमारे पास ही है। इन्होंने यहां पर आकर, हजारों किलोमीटर दूर रह कर ये पूरा पंजाब में, हरियाणा में इतना बड़ा नॉन गुजराती 'गुणातीत परिवार' खड़ा कर दिया - यह इनकी कितनी शक्ति है और कैसा इनका प्रभाव है?** सहजानंदस्वामी श्री स्वामिनारायण भगवान और काकाजी-पप्पाजी से प.पू. गुरुजी ने जो पाया, उनके द्वारा दी गई शिक्षा उन्होंने अपने जीवन में जो आत्मसात् कर ली और औरों के जीवन में एब्सोर्ब कराने की जो कोशिश कर रहे हैं – ऐसे गुरुजी हमारे हैं इसका भी हमें बहुत ही आनंद है। मुझे लगता है, **सीधे-सादे लेकिन कर्तव्य में एकनिष्ठ ऐसे गुरुजी के स्वरूप में हमने जो यहां पाया है वो हमारे सबका एक सद्‌भाग्य है...**

आज ऐसा ज़माना है, ऐसा वायुमण्डल है कि आदमी की नीयत कब बदल जाएगी, इसका भरोसा नहीं है और ऐसे समय में इतना बड़ा गुणातीत परिवार खड़ा करना बड़ा दुर्लभ है। यह काम भी वे बड़ी आसानी से कर रहे हैं। जरूर हमारे प.पू. गुरुजी के ऊपर काकाजी का, पप्पाजी का, हमारे स्वामिजी का – सबका हाथ है और गुरुजी का हाथ हमारे सिर पर है, इसीलिए हम सद्‌भागी हैं और ऐसे मंगलदिवस के ऊपर हम तो यही कामना करेंगे कि **आपका जीवन तो मानवजाति का अस्तित्व हो तब तक बना रहे।** तो यही हमारी शुभकामना होगी, लेकिन आप जैसी यही विशिष्टता हम जैसे सत्संगी भक्तों में भी पैदा हो, यही प्रार्थना हम आपसे आज के दिन करेंगे।

आप ऐसे समर्थ हैं; आप हमारी दिल की मंशा भी जानते हैं। तो, पूरे मानव समाज में और खास करके हमारे गुणातीत परिवार में आप जैसी मन की एक शुद्धता – मन की पवित्रता और साथ-साथ मानवता – वो हम जैसे मुमुक्षु जीव को भी प्राप्त हो और यही दिशा देने में आप हमें जरूर मार्गदर्शन दें। इन्हीं शब्दों के साथ गुरुजी के चरणों में मेरा वंदन है और सब हरिभक्तों को फिर से जय स्वामिनारायण।

प.पू. गुरुजी

अबकी बार की ज्योत की पत्रिका में पप्पाजी का एक संदेश आया है। ३० मार्च को हम जो सेलीब्रेशन करेंगे, तब तो जनरल समाज होगा। आज हम जो इकट्‌ठे हुए हैं, वो जिसे हम गुजराती में कहते हैं न – सालों से हमारे साथ 'कुटाएला'। मल्कानी अंकल को देखो २० - २५ साल हुए हमारे साथ जुड़े हुए। मतलब एक हमारे इनमेट्स जैसे सब इकट्‌ठे हुए हैं। माईन्ड का एक नॅचर है – 'डाउटिंग'! अभी किसी ने बताया कि ये

रास्ता भावना का है-श्रद्धा का है, दिमाग का नहीं है, लॉजिक का नहीं है। तो आज रात को घर जाकर खूब श्रद्धा से पप्पाजी की इस बात पर गौर करना।

दूसरी एक बात – **श्री काशीरामभाई** के साथ हमारा कोई संबंध होगा। आज सुबह ही एक बार मुझे विचार आया भी और मैंने फोन पर आपको पूछा भी कि आप कहाँ हो? पर, फिर मुझे हुआ कि मैं फोन करूंगा और इनको पता लगेगा कि आज तो डेट के हिसाब से एक्च्युअली बर्थ-डे है, तो वो पार्लियामेंट का काम इधर-उधर करके, एम्बरेस होकर भी किसी भी तरह आ जायेंगे। मैंने सोचा, ऐसा नहीं करना है। मैंने सोचा कि ३० तारीख को आ ही रहे हैं, करके मैंने वो बात दिमाग में से टाल दी। पर, शाम को राजेश का अचानक फोन आया। तब, मुझे हुआ और... मैंने काशीरामभाई को कहा भी कि आप आ रहे हो – वो तो मेरे मन की बात आपने छीन ली।

देखो, कई जगह पर पोलीटिकल लीडर्स आते हैं। लेकिन इन्होंने कभी भी बातें करी हैं, उसमें कोई पोलीटिकल टिंट नज़र नहीं आएगी। सत्संग के सिवा कभी कोई बात नहीं करी। मैं तो नहीं था, पर साहेब के फंक्शन में वे गए थे। प.पू. स्वामिजी वहाँ नहीं जा पाए थे, सो उनका सोफा खाली था। भगत लोग बोले हैं कि स्वामिजी के सोफे पर साहेब और किसी को बिठाएं उस बात में तो माल ही नहीं; पर राणा साहेब को दबाव डालकर प.पू. स्वामिजी के सोफे पर वहाँ बिठाया। साहेब ने मुझे दो तीन बार कहा भी कि 'भगत माणस छे'; राजकारणनी कोई बात नहीं – कांई नहीं। **ऐसे जो हमारे समाज के मेम्बर हैं – वो हमारी एसेट है।**

हेमंत मर्चंट से आज ही फोन पर हम बात कर रहे थे कि – **लोग ज्यादा इकट्ठे हो जाएं, वो अपनी एसेट नहीं है। कुटुंबभाव जितना डेवलप हो और जितना तगड़ा, मतलब दृढ़ हो – वो अपनी एसेट है।** जिसे बोलते हैं ना 'पोटेन्शियालिटी' – वो है। लेकिन अपने को ये विश्वास होना चाहिए कि साधु ये जो बात कह रहे हैं, साधु मतलब – पप्पाजी जो कह रहे हैं ये बात 'एम ज छे,' उसमें कोई पटाने की बात नहीं है। कई बार हम सोचते हैं कि महिमा की बड़ी-बड़ी बातें करें, लेकिन ऐसा थोड़े होता है? ये साधु जो बात कर रहे हैं वो सच में ऐसी ही है, यूं मानकर जो जिए वो सुखी हो जाएगा; उनके लिए यह बात है।

तो, हम जो गुणातीत समाज के सभ्य हैं, वे ये दिशा चूकें नहीं। तनिक भी – एक सूतभर भी, मैं तो कहता हूँ एक सूत का १००वां भाग भी चूकें नहीं; क्योंकि – **हमें पता नहीं कि कितनी हाई स्पिरिच्युअल टेक्नॉलोजी पर अपना काम चल रहा है।** आपको ख्याल होगा कि ये **मिसाइल जो जाता है उसकी डाईरॅक्शन में अगर एक सूत फरक पड़ गया, तो वह निश्चित ग्रह की बजाय किसी और ग्रह पर जाकर पहुँच जाएगा।** ऐसा नहीं कि थोड़ा डिस्टन्स पर पड़ेगा; बल्कि पूरा प्लॅनेट ही बदल जायेगा। तो ये तो चैतन्य का काम है। एक दिशा पक्की नहीं होगी, तो हम अपना डॅस्टीनेशन चूक जायेंगे। पप्पाजी की ये बात पर हमें खूब यकीन करना चाहिए कि जो-जो मुक्त गुणातीत समाज के – योगी परिवार के – गुणातीत परिवार के सभ्य हैं – आप सब जो यहां बैठे हो – वे भी जो स्वामिनारायण महाप्रभु को भजते हैं; सब – चाहे पुराने ३० साल के हों, २० साल के हों, १० साल के हों, ५ साल के हों, २ साल के हों या नक्षु की तरह १ साल के हों – वे हम सारे चैतन्यशुद्धि के मार्ग पर पड़े हुए हैं। अपना एक-एक पल का जो काम चल रहा है, इट इझ ए प्यॉरिफिकेशन ऑफ धी सोल। और जगह पर ऐसा नहीं है। मानो हमारा कारोबार कुछ बिगड़ा हुआ भी लगता है, लेकिन इट

इझ फॉर अवर प्यॉरिफिकेशन। ऐसा नहीं है कि हमारे कर्म ऐसे थे, सो हमारा ऐसा हुआ। वो जगत के लोगों के लिए है – जो इस समाज के सभ्य नहीं हैं। बाकी हम चाहे देहाती हों, गांव के हों, चाहे बड़े हों – छोटे हों, चाहे स्त्री हो – पुरुष हो, वो सब चैतन्यशुद्धि की प्रगति के मार्ग पर चले हुए हैं। दूसरों के लिए – कोई गड़बड़ हुई तो वो नीचे भी चला जाएगा, इसकी पीछे हट भी हो जाएगी। अपने यहां वो पॉसीबल ही नहीं है। पप्पाजी इसी बात को अलग ढंग से कहते थे कि हमारे ही प्रारब्ध और हमारी ही प्रकृति को यूज़ करके प्रभु हमारा विकास करवाते रहते हैं।

यूं, हमें मानना ही पड़े कि ये सब जो हैं वे सारे चैतन्यस्वरूप हैं। 'काल आया और चला गया' – ऐसा नहीं है। 'इसने ऐसा कर्म करा था सो भुगतना पड़ा या इसलिए ऐसा हुआ' – यूं ना समझें। 'वो माया में गया और फंसा' – ऐसा भी नहीं है। ऐसा नज़र भी आएगा, लेकिन वो उसकी प्रोग्रेस के लिए – चैतन्य के प्यॉरिफिकेटरी प्रोसेस के लिए इनएवीटेबल फॅक्टर होगा। 'नेसेसरी एविल' – अंग्रेजी में जिसे कहते हैं। उस तरीके से प्रभु ने उसके प्रारब्ध को या उसकी प्रकृति को यूज़ करा है।

इसीलिए **महाराज ने कहा ये जो 'टोला' है – ये जो 'ग्रुप है', इसको जगत के अन्य ग्रुप जैसा नहीं समझना।▲ ये एन्टायरली डिफरंट कॅटेगरी है। इन सब पर डाईरॅक्ट कन्ट्रोल प्रगट प्रभु का है। पप्पाजी इसे 'ब्रह्मनियंत्रित' कहते।** सो, दिव्य स्वरूप हैं। लेकिन, हम जगत में रहते हैं न? इसलिए जैसे शेर का छोटा बच्चा लोमड़ी के ग्रुप में चला गया, तो फिर वो लोमड़ी की तरह आवाज निकालने लग जाता है – जब तक इसको ख्याल नहीं पड़े कि मैं शेर हूँ। इसी तरह हम सब जगत में रहते हुए, उसके ढंग से सोचने-चलने लग जाते हैं। तब संत को हमारे प्रति एक दया आती है कि आप समझते क्यों नहीं हो?

अरे! बाहर का भी कोई जब ऐसे गुणातीत समाज के सभ्य के टकराव में आ जाता है – जैसे बंसरी के सिलसिले में हमारे पुरी साहब आए, तो उनका भी चार्ट बदल जाता है! मानव में से महामानव की योनि में प्रवेश मिलता है। पप्पाजी के संदेश का मर्म यही है कि गुणातीत समाज के हम सभ्य बनें, वो मानव में से महामानव की योनि में एन्ट्री है। समझ आए या नहीं आए; गुणातीत समाज के किसी भी सभ्य के बीच में-संग में आ गए, वो हम चैतन्य की प्रगति के मार्ग पर चल पड़े हैं। अपनी चार पांख है। कोई बहनों के बीच में आ जायेगा, कोई संतों के बीच में आ जायेगा, कोई ऐसे गृहस्थों के बीच में आ जायेगा, कोई अपने अभिषेक जैसे डॅडीकेटेड पार्षद के बीच में आ जायेगा – फ्लक्स में कहीं भी टकरा गया, वो प्रगति की राह पर चल पड़ेगा। ऐसे संतों के बीच में-मतलब संबंध में हम किसी तरह आ गए – वह हमारी लॉटरी लग गई है। एक बार हम गुणातीत संत के दिल में बैठ गए कि ये पुरी साहब अच्छे हैं – प्रभाकर अच्छा है; बस इतना ही हमारा साधन वे गिन लेते हैं। फिर जो करना है वो करा करो; क्यूं? फिर सारा कंट्रोल ब्राह्मीशक्ति का चल पड़ेगा। जगत के जीवों की तरह उन पर काल, कर्म, माया की हुकूमत नहीं है। ये कितनी बड़ी चीज है? अगर अपने भेजे में ये बात उतर जाए, तो सारी झंझट खतम हो जाएगी। लेकिन जैसे मैंने कहा ना कि शेर का बच्चा लोमड़ी के ग्रुप के बीच में फंस गया – यूं ये बात हम भूल जाते हैं और जगत के ढंग से चलने लगते हैं।

▲ जेम अन्य लोक थाय भेळा (= इकट्ठा), एम समजशो मा (= ना) ऐह (= इस) लीला! – भक्तचिंतामणी, प्र.७७

...मेरा पहले से स्वभाव है कि जो एक चीज पकड़ी तो पकड़ी। वो मुझे यहां काम में आ गई। काकाजी-पप्पाजी की ऐसी बातें जो पकड़ी गई, तो उसके अलावा और कोई बात मुझे टच नहीं कर पाई। चाहे कोई – कैसा ही प्रभावशाली हो, मुझे काकाजी-पप्पाजी-योगीजी महाराज-गुणातीत स्वरूपों – इन लोगों के सिवा किसी का प्रभाव नहीं पड़ा - ना पड़ सकता है।

...उनका संकल्प है, तो हमारे लिए वो सारे संजोग-हमारे प्रारब्ध, हमारी प्रकृति को ऊपर नीचे एड्जस्ट कर-करके प्रगति कराएंगे। मौज के रूप में अक्षरधाम मिला; हमने कोई साधन नहीं किया। एवरी थिंग इज़ मेनेज्ड एन्ड ऑरगेनाइज्ड बाय अवर मास्टर!

लेकिन चूक जाते हैं। दूसरों को देखकर हम भी सोचते हैं कि हम भी ऐसा करें। अभी थोड़े दिन पहले यज्ञप्रियस्वामी ने पूछा कि संस्था से हम जो अलग हुए उसका एक्च्युअल रीज़न क्या? मैंने समझाया कि – **एक टोटल स्पिरिच्युअल ग्रुप को अलग करके वो एक लक्ष्य - दिशा पर ही काम करे यही एक उद्देश्य से योगीजी महाराज ने ये दो टुकड़े करे। काकाजी-पप्पाजी ने जो एक एन्लाइटन्ड ग्रुप डॅवलप करा हुआ है, वो प्यॉर स्पीरिच्युअल बेईझ पर ही चले।**

गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है – पांदडे - पांदडे 'स्वामिनारायण'नुं भजन कराववुं छे – सत्संग फैलाना है। वो आज नज़र आता है। प्रमुखस्वामी महाराज ने यह जो 'अक्षरधाम' खड़ा कर दिया – पूरे भारत के ८० प्रतिशत में 'स्वामिनारायण' का नाम गूंज उठा है। यूं वह एक ग्रुप है। दूसरी ओर, महाराज का एक संकल्प था कि : ऐसे सत्संगी वैष्णव – वही हमारी नात है, वही हमारी जात है वही हमारी बिरादरी है और ऐसे वैष्णव के साथ ही हमें रहना है। महाराज के इस संकल्प के लिए यह ग्रुप अलग करा। ये बात स्पष्ट रूप से अपने दिमाग में बैठ जाए कि इसमें टकराव वाली कोई बात नहीं है, पर वो एक ग्रुप प्रवाही मार्ग के लिए काम करता रहे और काकाजी जो बोलते थे कि – 'स्पीरिच्युअल टॅक्निशियन्स तैयार करने हैं' – उसके लिए ये ग्रुप रखा हुआ है। हम प्यॉर स्पीरिच्युअल काम करें। पर, देखादेखी हम दिशा चूक जाते हैं...

पप्पाजी तो बोले थे कि जिनको सिर्फ भगवान चाहिए होंगे वे यहाँ आएंगे। बाकी वो इन्सीडंस भी हम जानते हैं कि बहनों ने हॉस्पिटल का प्लान रखा था, तो पप्पाजी ने वो प्लान बिना देखे ही फाड़ दिया था। और... कहा था – 'आ आपणु काम छे?' **वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को पकड़ कर भगवान को केन्द्र में रख करके भगवान के बल से, भगवान के होकर भगवान के लिए जीवन जीता एक आध्यात्मिक समाज तैयार हो, उसके हम मेम्बर हैं।** सो, और कोई टेम्पटेशन्स में हमें नहीं जाना है।

धाम-धामी और मुक्त ये तीन ही हमारे लिए सत्य हैं। प्रभाकर ने बात करी, वह एकदम सही है। मैं गया ही इसीलिए था कि चलो कौशिक को मिल आऊं - एक सत्कर्म हो जाएगा। मैं क्या समझता हूँ कि **करोड़ों साल की तपस्या करने से भी अधिक फल कौशिक जैसे भगत के लिए यानि – संबंध वाले भक्त के लिए दौड़ाभागी करने से मिलता है। इससे हमारे कई प्रारब्ध के चक्कर महाराज अपने**

आप काट देंगे। ये भी एक टॅक्नीक है। प.पू. काकाजी के शब्दों में – कोयला तोलने के तराजु और हीरे के स्केल की भांति का फर्क भेजे में समझ कर हम लेंगे... तो आज की तुम्हारी १३ मार्च भी सार्थक हो जायेगी। सहजानन्दस्वामी महाराज की जय।

प.भ. मोहन बंसलजी

...एक बार एक वकील कोर्ट में पैरवी कर रहा था, तो किसी ने आकर उसको एक चिट दी। वो चिट देखकर उसके चेहरे पर बड़ी परेशानी आई। थोड़ी देर बाद में वो आदमी फिर आया और उसको दूसरी चिट दी। वह चिट (वकील ने) उसने देखी, पढ़ी और उसकी आंखों में आंसू आ गए। पर, वो चिट भी उसने अपनी जेब में डाल ली। तीसरी बार फिर उसको चिट आई और उसने वह चिट देखी और फिर से अपनी जेब में डाल ली। केस की पैरवी जब खत्म हो गयी, तो जज ने उसको पूछा कि वैसे तो यह आपकी पर्सनल बात होगी, पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि माजरा क्या था और वो क्या बात थी कि वो आदमी आपको यूं तीन बार चिट देकर गया।

दरअसल – **सरदार वल्लभभाई पटेल** किसी एक क्रांतिकारी का केस लड़ रहे थे और तब ही उनकी पत्नी का देहांत हो गया था। पहली बार मेसेज था कि आपकी पत्नी बहुत सीरियस है, दूसरा था कि वो मर गई है और तीसरी बार था कि दाह संस्कार कर दिया। पर, जैसे उन्होंने अपने बारे में कुछ नहीं सोचा, इसी तरह **गुरुजी ने अपना जीवन ऐसा बना लिया है कि अपने बारे में कुछ नहीं सोचना। बस! कैसे-जैसे भी – भक्त का किसी भी प्रकार से कल्याण हो - भला हो। आप में सबसे बड़ी चीज कुटुंबभाव के साथ जो सखाभाव है** - वो है। **छोटे से छोटे तक को भी आप नाम से जानते हैं। ये एक विलक्षण चीज है।** मतलब, इतना सखाभाव किसी में आना एक बहुत बड़ी बात है। इसलिए **गुरुजी मैं तो ये कहूंगा कि सही मायने में आपका जो जन्म है, वो हमारे सबके कल्याण के लिए है।**

प.भ. मल्कानी अंकल

टु डे इझ गुरुजीज़ रियल बर्थ-डे। माई कॉंग्रेच्युलेशन्स टु ऑल ऑफ यू। टु डे इझ शीलाज़ बर्थ-डे ऑलसो। सो, कॉंग्रेच्युलेशन्स टु हर एन्ड वॉर्म विशीस टु हर फॉर गुड हेल्थ।

दो चार दिन से बहुत अच्छे-अच्छे प्रवचन सुने। वो दिन पंजाब के भाई नरेन्द्रजी ने जो-जो बातें कही मुझे बहुत जँची। पर मैं उस टाईम में सोच रहा था कि उन्होंने तो गुरुजी की महिमा बहुत एक सुंदर तरीके से बतलाई। काकाजी की, गुरुजी की, भगवान स्वामिनारायण की बहुत एक सुंदर तरीके से बतलाई। आज राणा साहेब ने बहुत मन में लगने वाली बातें बतलाई। मैं यहां के भजन बार-बार सुनता हूँ – कैसेट्स सुनता हूँ। उनके वर्डिंग्स जो हैं वही एक काफी हैं जिंदगी में सुधार करने के लिए... मैं दिल से सोचता हूँ कि **प्रभु ने हमारे ऊपर बहुत कृपा करी कि यहां रखा – दिल्ली में। ये एक सब पर – हम सब पर एक गिफ्ट है – प्रभु की ओर से।** तो, अभी बैठे-बैठे मन में एक विचार आया कि गुरुजी से गिफ्ट मांग लूं। शायद आप ना भी करें तो भी ठीक, हां भी करें तो वाह-वाह। मैंने ये सोचा कि आज आप से एक मांगता हूं कि आज हम

सब मिल कर आपकी आरती कर लेवें। सच में – ये मेरे अपने मन की बात है। मेरे को यह भी पता है कि सब ऐसे चाहते भी होंगे कि आज ऐसा ओ.के. कर दो। आप, पीछे बैठे हुए हैं – काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी सभी यहां बैठे हैं। अभी आरती कर लेते हैं...

सुबह आपसे बात करता हूँ। जय स्वामिनारायण होता है; **फिर कुछ थोड़ा समय गुजरता है, तो पता नहीं क्या एक खालीपन-सा लगता है। फिर किसी न किसी बहाने** – कोई आर्टिकल की कोई बात लेकर फिर **गुरुजी से बात कर लेता हूँ।** नहीं तो सूना-सा लगता है मेरे को। **दो-चार दिन पहले गाड़ी भी चला रहा था, फिर रुका; मैंने गुरुजी को एक टेलीफोन किया।** आपको ख्याल होगा – गुरुजी, मंगलवार को मैंने आपको टेलीफोन किया था। तब रास्ते में ही था। **मेरा ऐसा लाइफस्टाईल तो रहा नहीं है; फिर भी मैं बार-बार इनको मिस करता हूँ या टेलीफोन से बात करने की या आवाज सुनने की इच्छा होती है।** तो ऐसा है कि आई रीयली लव हिम। **मैं तो आज गुरुजी को बर्थ-डे पे ये कहने वाला था कि गुरुजी आई रीयली लव यू** एण्ड ये भी मैं विश्वास रखता हूं कि इक्वली ऑल ऑफ अस – छोटे से लेकर बड़ा तक – वी लव यू।

बट, इसमें एक बात जरूर है जो कहने लायक है कि जितना मैं उनसे प्रेम करता हूँ या आप सब प्रेम करते हैं गुरुजी से – अपने-अपने ढंग से **हम सब मिलकर उनको जितना प्रेम करते हैं, गुरुजी हम सबको उससे बहुत-बहुत ज्यादा प्रेम करते हैं।** फॅक्ट है ये बात। कहते हैं न कि **सम टाइम-सम डे यू हॅव टु एग्री विथ धी रीयालिटी एण्ड फॅक्ट्स ऑफ लाईफ।**

कई टाइम में हम सोचते हैं कि हमने ये गलत किया – हमने ये सही किया। खुद भी टटोलता हूँ; मन को कई टाइम ये होता भी है - ये गल्तियाँ नहीं करता। मगर एक बात है; गुरुजी, शायद पहले भी मैंने आपसे कहा था, इतने वर्षों के बाद भी कहता हूँ कि **मेरी लाईफ का बेस्ट-स्टेप, राइट स्टेप, करॅक्ट स्टेप यही रहा जो आपसे हम मिले और आपसे संबंध हमने रखा और उससे भी ज्यादा यह कि आपने हमारे सब ब्रेन वेव़्ज– सब मेन्टल थिंकिंग को – सब एक्सेप्ट करके ट्रान्सफॉर्म कर दिया।** सो आई मस्ट थैंक यू। आई मस्ट टेल यू धेट वी लव यू, **आई लव यू ए लॉट।** हॅपी बर्थ-डे।

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

शेष अगले अंक में...

चातुर्मास के नियम... (14 जुलाई 2008, सोमवार से 9 नवंबर 2008, रविवार तक)

1. जिन्हें सुविधा हो वे – शाम की धुन व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनिट धुन व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धुन अचूक करें।
2. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पाएं वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जाएं।
3. सावन के महीने यानि – 2 अगस्त से 30 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।

4. 14 जुलाई — नियम की एकादशी
   24 अगस्त — जन्माष्टमी
   11 सितंबर — जलझीलनी एकादशी
   9 नवंबर — कार्तिक शुक्ला एकादशी – इन चारों दिन व्रत रखें।
5. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवाएं।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, ब्रह्मविद्या, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप-सी.डी. द्वारा सुनें या तो वीडियो द्वारा दर्शन से कथा का लाभ लें।
7. रोज सुबह या सायं चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
8. परिवार में एवं सत्संगिओं में संप-सुहृद्भाव-एकता से मिलजुल कर काम-सेवा करने की आदत डालना और उस हेतु प्रगट प्रभु से बल माँगने **सुबह उठ कर फ्रेश होकर ऐसे मुक्तों को याद करके दस मिनिट प्राणिक जाप करें।**
9. साथ में रहते-सेवा करते मुक्तों को 'संबंध' की दृष्टि से ना देख कर, उनके साथ प्राकृतबुद्धि से – व्यावहारिक बुद्धि से वर्ताव हो जाए – उनके बारे ऐसी सोच में चले जाएं, तो इस गलती की माफी के लिए रात को 10 मिनिट अवश्य प्रार्थना कर लें।
10. सप्ताह में समय निकाल कर एक बार किसी भी सत्संगी के घर उन्हें मिलने-करने, धुन-भजन करने, खबर देखने, कोई कार्य में हाथ बटाँने जाना।

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	31.5.2008,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	1.6.2008,	रविवार	—	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन
(3)	दि.	12.6.2008,	गुरुवार	—	**अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति एवं ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** ***(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)***
(4)	दि.	13.6.2008,	शुक्रवार	—	भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि
(5)	दि.	14.6.2008,	शनिवार	—	भीम एकादशी, व्रत
(6)	दि.	18.6.2008,	बुधवार	—	वटसावित्री
(7)	दि.	29.6.2008,	रविवार	—	एकादशी, व्रत
(8)	दि.	4.7.2008,	शुक्रवार	—	रथयात्रा
(9)	दि.	14.7.2008,	सोमवार	—	देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ

अर्पणम्

अभिनंदन....

अनावरण

धुन... रामबाण इलाज

प.पू. गुरुजी की कथावार्ता

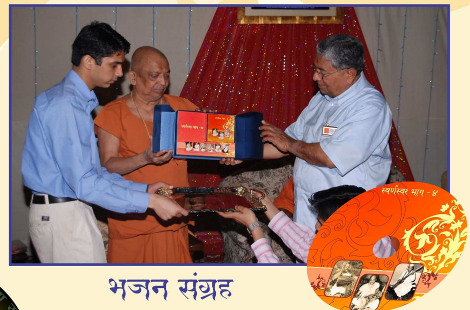

भजन संग्रह

धूम मची रे आजे धूम मची रे , लाडीले लाल की धूम मची रे...

सुस्वागतम्....

'सिर्फ सिम्पल और सोबर से भी ज्यादा, प्यॉर स्पीरिच्युअल कन्सेप्ट लग रहा है।' – सौ. शीला आंटी

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052